व्यक्तित्व के परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ

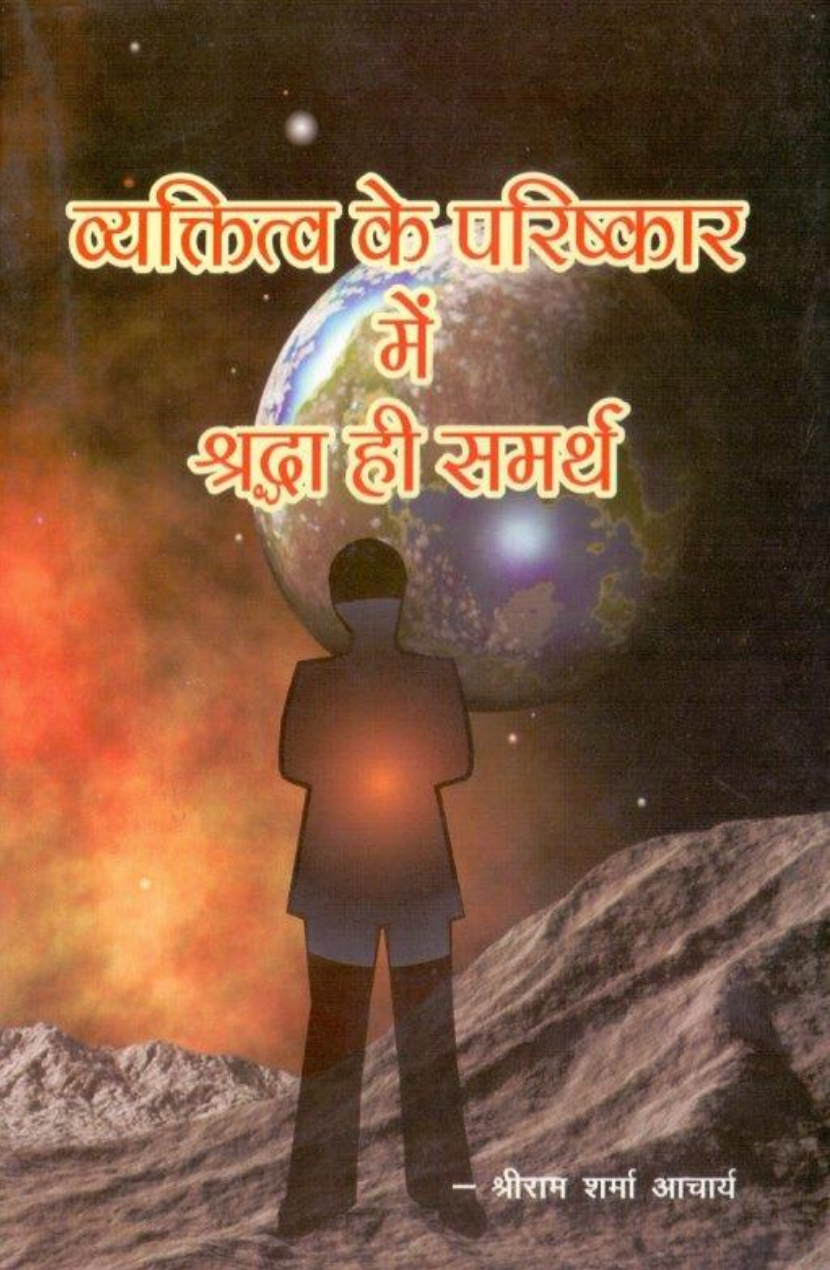

— श्रीराम शर्मा आचार्य

व्यक्तित्व-परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : १०.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

■

हमारे चिंतन में गहराई हो, साथ ही श्रद्धायुक्त नम्रता भी। अंतरात्मा में दिव्य-प्रकाश की ज्योति जलती रहे। उसमें प्रखरता और पवित्रता बनी रहे तो पर्याप्त है। पूजा के दीपक इसी प्रकार टिमटिमाते हैं। आवश्यक नहीं कि उनका प्रकाश बहुत दूर तक फैले। छोटे-से क्षेत्र में पुनीत आलोक जीवित रखा जा सके तो वह पर्याप्त है। परमात्मा के प्रति अत्यंत उदारतापूर्वक आत्म भावना पैदा होती है वही श्रद्धा है। सात्विक श्रद्धा की पूर्णता में अंतःकरण स्वतः पवित्र हो उठता है। श्रद्धायुक्त जीवन की विशेषता से ही मनुष्य स्वभाव में ऐसी सुंदरता बढ़ती जाती है, जिसको देखकर श्रद्धावान् स्वयं संतुष्ट बना रहता है। श्रद्धा सरल हृदय की ऐसी प्रीतियुक्त भावना है, जो श्रेष्ठ पथ की सिद्धि कराती है।

■

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तित्व-परिष्कार में श्रद्धा ही समर्थ

जीवात्मा ने तीन कलेवर ओढ़ रखे हैं, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर कहते हैं। स्थूल शरीर की शक्ति क्रिया है। इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के उपार्जन होते हैं। श्रम का महत्त्व हम सभी जानते हैं। जो कुछ कमाया-उगाया जाता है, उसका प्रमुख आधार श्रम ही होता है। सक्रियता के अभाव में अभीष्ट उपलब्धियाँ तो प्राप्त करना दूर—जीवित रह सकना तक संभव न हो सकेगा।

दूसरा कलेवर है, सूक्ष्म शरीर, जिसे मनःसंस्थान कहा जा सकता है। चिंतन इसी की शक्ति है। कल्पना, निर्णय, विश्वास के नाम से बुद्धि, चित्त के नाम से चेतन-अचेतन, उच्च चेतन के नाम से इस चिंतन को चित्त शक्ति के नाम से जाना जाता है। शरीर में सक्रियता, मन में सूझबूझ यही दो प्रमुख आधार भौतिक जीवन की विभिन्न क्षेत्रों की प्रगतियों और समृद्धियों को उपलब्ध करते हैं। श्रम और बुद्धि का ही वह सब कुछ उत्पादन है, जिसे हम संपदाओं और सहानुभूति के साधनों की तरह देखते हैं। भौतिक उपलब्धियों का रथ इन्हीं दो चक्रों के सहारे घूमता है। इन्हीं की न्यूनता से पिछड़ापन बना रहता है और जब वे पर्याप्त मात्रा में होते हैं तो सफलताओं के अंबार लगाते चले जाते हैं। इस तथ्य को सभी जानते हैं और क्रियाशक्ति बढ़ाने के लिए शरीर को तथा बुद्धिमत्ता बढ़ाने के लिए मन को परिपुष्ट बनाने के लिए यथासंभव प्रयत्न भी करते हैं।

शरीरों में क्रमशः एक के बाद दूसरा अधिक श्रेष्ठ है, अति श्रेष्ठ है। शरीरगत श्रम से थोड़ा-सा ही पारिश्रमिक प्राप्त किया जा सकता है किंतु बुद्धिबल के सहारे प्रबुद्ध व्यक्ति प्रचुर परिणाम में धन और यश प्राप्त करते हैं। आलस्य से होने वाली हानि की तुलना में प्रमाद द्वारा प्रस्तुत हानि अत्यधिक होती है। इस प्रकार श्रमजीवी की तुलना में बुद्धिजीवी को अधिक श्रेय मिलता है। स्पष्ट है कि स्थूल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरीर का महत्त्व होते हुए भी सूक्ष्म शरीर की क्षमता का मूल्य अधिक है। श्रम की तुलना में चिंतन की गरिमा का स्तर ऊँचा है।

तीसरा कारण शरीर है। इसे अंतःकरण-अंतरात्मा आदि नामों से पुकारा जाता है। भाव-संवेदनाओं का क्षेत्र यही है। विश्वासों की नींव उसी में जमती है। आस्थाएँ और निष्ठाएँ इसी मर्मस्थल में जमी रहती हैं। समूचा व्यक्तित्व इसी क्षेत्र से निश्रत होने वाली प्रेरणाओं के आधार पर ढलता है। आकांक्षाएँ-अभिलाषाएँ यहीं से उभरती हैं। व्यक्तित्व को हिला डालने वाली और मनुष्य को कहीं से कहीं घसीट ले जाने वाली भाव-संवेदनाओं की गंगोत्री इसी केंद्र को कह सकते हैं। व्यक्ति जैसा कुछ है इसी अंतःकरण की प्रतिमूर्ति है। क्या पिछड़े, क्या प्रगतिशील, क्या सुर, क्या असुर इसी क्षेत्र को स्थिति के अनुरूप ढलते हैं।

जीवन की दिशाधारा को मस्तिष्क निर्धारित नहीं करता और न शरीर की क्रियाशीलता स्वतंत्र है। इन दोनों को अंतःकरण का गुलाम कह सकते हैं। उनका अपना अस्तित्व निर्दिष्ट दिशा में चलता रहता है। किधर चलना है इसका निर्धारण आकांक्षाओं का क्षेत्र अंतःकरण ही करता है। जैसी आकांक्षाएँ उभरती हैं, उसी के अनुरूप मस्तिष्क की सारी मशीन सोचने में लग जाती है और शरीर के कल-पुर्जे इसी निर्देश का पालन करने में जुट जाते हैं। मन और शरीर ही काम करते दिखाई पड़ते हैं, पर वस्तुतः वे यंत्रवत् हैं और अपने असली मालिक अंतःकरण की प्रेरणाओं के अनुरूप उसकी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही निरंतर काम करते हैं। व्यक्तित्व के मूल में आस्थाएँ ही काम करती हैं। गतिविधियों का संचालन आकांक्षाओं के अनुरूप होता है। यही है मानव-तत्त्व का सार। मनुष्यों की शारीरिक संरचना लगभग एक जैसी ही है और उसके बीच नगण्य-सा ही अंतर पाया जाता है किंतु पतित, प्रखर और उत्कृष्ट स्तर के मनुष्यों के बीच जो अंतर पाया जाता है, उसे जमीन, आसमान जैसा कहा जा सकता है। सौभाग्य एवं दुर्भाग्य की आधारशिला यही रखी जाती है। व्यक्तित्व की ढलाई इसी दिव्य-संस्थान में होती रहती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतःकरण की उत्कृष्टता को श्रद्धा के नाम से जाना जाता है, उसका व्यवहारिक स्वरूप है भक्ति। यों साधारण बोलचाल में दोनों का उंपयोग पर्यायवाची शब्दों के रूप में होता है, फिर भी कुछ अंतर तो है ही, श्रद्धा अंतरात्मा की आस्था है। श्रेष्ठता के प्रति असीम प्यार के रूप में उसकी व्याख्या की जा सकती है। भक्ति उसका व्यावहारिक रूप है। करुणा, उदारता, सेवा, आत्मीयता के आधार पर चलने वाली विभिन्न गतिविधियों को भक्ति कहा जा सकता है। देश भक्ति, आदर्श भक्ति, ईश्वर भक्ति आदि के रूपों में त्याग बलिदान के, तप-साधना के, अनुकरणीय आदर्शवादिता के अनेकों उदाहरण इसी भक्ति की प्रेरणा से बन पड़ते हैं।

आस्थाएँ-आकांक्षाएँ जब परिपक्व स्थिति में पहुँचती हैं और निश्चयपूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती हैं तो उन्हें संकल्प कहते हैं। संकल्प की प्रखरता मस्तिष्क और शरीर दोनों को अभीष्ट दिशा में घसीट ले जाती है और असंख्यों अवरोधों से टकराती हुई उस लक्ष्य तक पहुँचाती है, जिसे आरंभ में असंभव तक समझ जाता था। पुरुषार्थियों की यश गाथा से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। वस्तुतः उन्हें संकल्प शक्ति का चमत्कार ही कह सकते हैं। यहाँ इतना और समझने की आवश्यकता है कि संकल्प उभर कर आने से पूर्व विश्वास बनकर मनःक्षेत्र में अपनी जड़ें जमाता है या उस बीज का प्रत्यक्ष पौधा संकल्प में प्रकट होता है। विश्वास को प्रतिक्रिया ही संकल्प है। यही कारण है कि अंतःकरण की उच्चस्तरीय आस्थाओं को श्रद्धा विश्वास का रूप दिया गया है। वे उत्कृष्ट स्तर की होने पर शिव पार्वती का युग्म बनते हैं और निकृष्ट होने पर आसुरी क्रूर कर्मों में इस प्रकार निरत दिखाई पड़ते हैं जैसा कि उपाख्यानों में दानवों एवं शैतान का चित्रण किया जाता है।

जीवात्मा के उच्चतम आवरण-कारण शरीर की, अंतःकरण की स्थिति एवं शक्ति को यदि ठीक तरह समझा जा सके तो मात्र उसी को व्यक्तित्व का सारतत्त्व कहा जाएगा।

गीताकार ने इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा है—**"श्रद्धा मनोयं पुरुष, यौ यच्छद्धः स एवस"** अर्थात् जीव की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति श्रद्धा के साथ लिपटी हुई है। जिसकी जैसी श्रद्धा है वह वैसा ही है। क्रिया, विचारणा और भावना यही चेतना की तीन शक्तियाँ हैं। श्रेष्ठता की दिशा में जब वे बढ़ती हैं तो सत्कर्म, सद्ज्ञान एवं सद्भाव के रूप में उन्हें काम करते देखते हैं। इन्हें सुविकसित करने के विज्ञान को अध्यात्म कहते हैं। ब्रह्मविद्या का विशालकाय ढाँचा इसी के निमित्त खड़ा किया गया है। चेतना की श्रेष्ठता के साथ जोड़ देने के प्रयास को ही योग कहते हैं। योग साधना की तीन ही प्रमुख धाराएँ हैं—कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग; इन्हीं के सहारे जीवन लक्ष्य प्राप्त होने की स्थिति बनती है। इसी त्रिवेणी में स्नान करने से परम पद की प्राप्ति का लाभ मिलता है।

उपरोक्त विवेचना के सहारे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मानव जीवन में सबसे बड़ी, सबसे ऊँची, सबसे समर्थ शक्ति 'श्रद्धा' की ही है। मनःस्थिति को परिस्थितियों का सृजनकर्त्ता कहा गया है। शरीर को जन्म तो माता-पिता के प्रयत्न से मिलता है, पर आत्मा को उत्कृष्टता, श्रद्धा और विश्वासरूपी दिव्य-जननी और जनक की अनुकंपा का फल माना जा सकता है। विधाता द्वारा भाग्य लिखे जाने के अलंकार में तथ्य इतना ही है कि अपना अंतःकरण अपने स्तर के अनुरूप मनुष्य की प्रगति, अवनति आदि का ताना-बाना बुनता है, अदृश्य कृपा—दैवी अनुग्रह—आदि का सात्विक स्वरूप समझना हो तो उन्हें अंतःकरण के ही वरदान, अभिशाप कह सकते हैं। लोक व्यवहार में कहा जाता है कि 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।' गीता कहती है—**'आत्मैव्रह्मात्मन् बंधु-आत्मैव रिपुरात्मेनः'** अर्थात् मनुष्य स्वतः ही अपना मित्र और शत्रु है। उत्थान और पतन की कुंजी पूरी तरह उसके अपने हाथ में है और वह सुरक्षित एवं सुनिश्चित रूप में अंतःकरण में रखी रहती है। इसी चाबी को शास्त्रकारों ने आस्था, निष्ठा, श्रद्धा, भक्ति, विश्वास, संकल्प आदि के नामों से पुकारा है। भावनाओं और आकांक्षाओं के रूप में भी इसी तथ्य की अलग-अलग ढंग से व्याख्या की जाती है।

उल्लसित वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण पूर्णतया सत् श्रद्धा के हाथ में है। उसी का महत्त्व, मर्म, उपार्जन, अभिवर्धन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिखाने के लिए भूतकाल की कथा-गाथाओं को पुरातन उपाख्यानों में पुराण के नाम से जाना और जनाया जाता है। भूत, भविष्य और वर्तमान की सुखद संभावनाओं का निर्माण अंतःकरण के जिस क्षेत्र में विनिर्मित होता है, उसका स्वरूप समझना हो तो एक 'श्रद्धा' शब्द का उपयोग करने से वह प्रयोजन पूरा हो सकता है।

बीज ही वृक्ष बनता है और श्रद्धा ही व्यक्तित्व का रूप धारण करती है, मनुष्य जो कुछ बनता है, जो कुछ पाता है वह समूचा निर्माण 'श्रद्धा' शक्ति के चमत्कार के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यदि इस ब्रह्म विज्ञान के, आत्म-विज्ञान के गूढ़ रहस्य को समझा जा सके तो प्रतीत होगा कि तत्त्वदर्शियों ने वेदांत प्रतिपादित सनातन सत्य को अयमात्मा ब्रह्म—प्रज्ञातं ब्रह्म, तत्त्वमसि, सोहम्, शिवोहम्, सच्चिदानंदोहम् आदि सूत्र में घोषित किया है। पतन से बचने और उत्थान अपनाने का सुनिश्चित उपाय बताते हुए शास्त्रकार इस उत्तरदायित्व को मनुष्य के अपने कंधे पर ही लाद देते हैं—वे कहते हैं—**"उद्धरेत् आत्मनात्मानं नात्मानभवसादयेत"** अर्थात् अपना उद्धार आप करो, अपने को गिराओ मत। उनका सुनिश्चित मत है कि उत्थान-पतन की मुहीम हर मनुष्य स्वतः ही सम्हालता है। परिस्थितियाँ तो उसका अनुगमन भर करती हैं। दिशा निर्धारण और प्रगति प्रयास अपना होता है—साधन और सहयोग तो उसी चुंबकत्व के सहारे खिंचते भर चले जाते हैं। उत्थान या पतन में से जो भी अपना गंतव्य हो—व्यक्तियों, साधनों एवं परिस्थितियों का सरंजाम भी उसी स्तर का जुटता चला जाता है। श्रद्धा को इसी गरिमा को देखते हुए अध्यात्म शास्त्र ने मानवी सत्ता में विद्यमान साक्षात् ईश्वरीय शक्ति के रूप में अभिवंदन किया है। उसी की उपलब्धि को आत्मोपलब्धि कहा गया है और जीवन लक्ष्य की पूर्ति का केंद्र बिंदु माना है। न केवल आत्मिक वरन् भौतिक प्रगति का आधार भी सहज और समर्थ व्यक्तित्व ही रहता है। उसका निर्माण भी उसी स्तर की निष्ठाएँ करती हैं। इतना ही नहीं दुष्ट, दुरात्मा, क्रूरकर्मी और दुस्साहसी समझे जाने वाले लोग भी अपनी दानवी क्षमताओं का विकास इसी श्रद्धा तत्त्व के अहंकारी आसुरी स्तर का सहारा लेकर सम्मान करते हैं। ईश्वर ने अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार का स्वामित्व अपने हाथ में रखा है, किंतु एक छोटी दुनिया को निजी व्यक्तित्व के रूप में मनुष्य के हाथ में ही सौंप दिया है। कर्मफल पाने की व्यवस्था में तो वह पराधीन हैं, किंतु कर्म कुछ भी करते रहने की पूरी छूट ही है। इसी स्वाधीनता के सहारे वह अपने भाग्य का विधाता और स्तर निर्माता बन सकने में पूर्णतया सफल होता है। वह जैसे व्यक्तित्व एवं लक्ष्य के प्रति अपनी आस्था सुदृढ़ कर लेगा, वैसा ही बनता जाएगा।

जीवन श्रद्धा और शालीनता युक्त जिएँ !

हमारे चिंतन में गहराई हो, साथ ही श्रद्धायुक्त नम्रता भी। अंतरात्मा में दिव्य-प्रकाश की ज्योति जलती रहे। उसमें प्रखरता और पवित्रता बनी रहे तो पर्याप्त है। पूजा के दीपक इसी प्रकार टिमटिमाते हैं। आवश्यक नहीं कि उनका प्रकाश बहुत दूर तक फैले। छोटे-से क्षेत्र में पुनीत आलोक जीवित रखा जा सके तो वह पर्याप्त है।

अल्वर्ट श्वाइत्जर कहते थे—आदर्शों को चरितार्थ करने के लिए मुहूर्त की प्रतीक्षा आवश्यक नहीं। उसके लिए सदा सुअवसर है। वह अभी भी है और कभी भी। सबसे अच्छा समय तब है जब परिस्थितियाँ सर्वथा प्रतिकूल जा रही हों।

हम आकाश में बिखरी सुविस्तृत महानता को देखें। साथ ही समुद्र जैसी गहराईयों को भी। मनुष्य इन सबसे बड़ा है उसका वजन पर्वत से भारी है। पर्वत बेजान हैं और आदमी जानदार। संसार को बनाया तो भगवान ने है, पर उसे सुधारा और सँभाला आदमी ने है। इस पृथ्वी की शोभा, सज्जा और उपयोगिता आज जिस रूप में दीख पड़ती है। वैसी पहले नहीं थी, यह आदमी की सूझ-बूझ और मेहनत है, जिसने इतने प्रभावशाली परिवर्तन प्रस्तुत किए और प्रगति के चरण उठाए हैं। इतने पर भी ध्यान रखने योग्य बात यह भी है कि वही जेलखानों और पागलखानों में भी बंद है। कुकृत्यों से वही सृष्टा की इस कलाकृति मानवी काया को कलंकित करने में भी पीछे नहीं है अपने आपको तो पूरी तरह नष्ट कर सकता है, साथ ही दूसरों को भी क्षति पहुँचा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का सम्मान ही आचार शास्त्र है। अनीति ही जीवन को नष्ट करती है। मूर्खता और लापरवाही से तो उसका अपव्यय भर होता है। बुरी तो बर्बादी भी है पर विनाश तो पूरी विपत्ति है। बर्बादी के बाद तो सुधरने के लिए कुछ बच भी जाता है पर विनाश के साथ तो आशा भी समाप्त होती है। अनीति अपनाने से बढ़कर जीवन का तिरस्कार और कुछ हो नहीं सकता। पाप अनेकों हैं उनमें प्रायः आर्थिक अनाचार और शरीरों को क्षति पहुँचाने जैसी घटनाएँ ही प्रधान होती हैं। इनमें सबसे बड़ा पातक जीवन का तिरस्कार है। अनीति अपनाकर हम उसे क्षतिग्रस्त, कुंठित, हेय और अप्रमाणिक बनाते हैं। दूसरों को हानि पहुँचाना जितनी बुरी बात है—दूसरों के ऊपर पतन और पराभव थोपना जितना निंदनीय है, उससे कम पातक यह भी नहीं है कि हम अपने जीवन का गला अपने हाथों घोटें और उसे कुत्सित, कुंठित, बाधित, अपंगों एवं तिरस्कृत स्तर का ऐसा बना दें जो मरण से भी अधिक कष्टदायक हो।

अंतरात्मा में यदि किसी दिव्यवाणी को सुनने की शक्ति हो तो अपने भीतर बैठा हुआ कोई 'नैतिक' यह कहते हुए पाया जाएगा कि जो सुख-साधन समाज के अनुग्रह से मिले हैं, उन्हें लूट का माल न समझा जाए। अपने पास जो स्वस्थता, शिक्षा, प्रतिभा, योग्यता, सुविधा, संपदा, प्रतिष्ठा उपलब्ध है; वह अनेकों ज्ञात एवं अज्ञात, जीवित एवं दिवंगत—मनुष्यों के सहयोग से ही संभव हुई है। उसे ऐसे हजम नहीं कर जाना चाहिए और न परिवार वालों के लिए यह सब कुछ संग्रह करके रखना चाहिए। इसमें अन्यों को भी हिस्सेदार बनाया जाए—विशेषतया जो अपने पैरों दूर तक चल नहीं सकते, जिन्हें किसी की सहायता की अपेक्षा है, यदि इस आत्मा की पुकार को न सुना जाए तो उसका प्रतिफल यह होगा कि ऋणग्रस्तों की तरह अपना अंतःकरण भारी होता चला जाएगा और उस उल्लास की अनुभूति न हो सकेगी, जो जीवन देवता के अनुग्रह से हर घड़ी होती रहनी चाहिए।

मानव देह में एक चिरंतन आध्यात्मिक सत्य छुपा हुआ है, जब तक वह मिल नहीं जाता इच्छाएँ उसे इधर से उधर भटकाती, दुःख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के थपेड़े खिलाती रहती हैं। सत्यामृत की प्राप्ति नहीं होती जब तक मनुष्य बार-बार जन्मता और मरता रहता है, न कोई इच्छा तृप्त होती है न आत्म संतोष होता है, जबकि मनुष्य की सारी क्रियाशक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उसी की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहती है।

अपने आपको, अपनी चेतन सत्यता को पहचानना आसान बात नहीं है। विद्यमान परिस्थितियाँ ही धोखा देने के लिए पर्याप्त होती हैं फिर जन्म-जन्मांतरों के प्रारब्ध इतने भले नहीं होते जो मनुष्य को साधारणतः ही क्षमा कर दें। हमारा असली व्यक्तित्व इतना स्पष्ट है कि उसकी भावानुभूति एक क्षण में हो जाती है, वह परदों में नहीं रहता फिर भी वह इतना जटिल और कामनाओं के परदों में छुपा हुआ है कि उसके असली स्वरूप को जानना टेढ़ा पड़ जाता है। साधना-उपासना करते हुए भी बार-बार पथ से विचलित होना पड़ता है। ऐसी असफलताएँ ही जीवन लक्ष्य में बाधक हैं।

श्रद्धा वह प्रकाश है जो आत्मा की, सत्य की प्राप्ति के लिए बनाए गए मार्ग को दिखाती रहती है। जब भी मनुष्य एक क्षण के लिए लौकिक चमक-दमक, कामिनी और कंचन के लिए मोहग्रस्त होता है तो माता की तरह ठंडे जल से मुँह धोकर जगा देने वाली शक्ति यह श्रद्धा ही होती है। सत्य के सद्गुण, ऐश्वर्य-स्वरूप एवम् ज्ञान की थाह अपनी बुद्धि से नहीं मिलती, उसके प्रति सविनय प्रेम भावना विकसित होती है, उसी को श्रद्धा कहते हैं। श्रद्धा सत्य की सीमा तक साधक को साधे रहती है, सँभाले रहती हैं।

श्रद्धा के बल पर ही मलिन चित्त अशुद्ध चिंतन का परित्याग करके बार-बार परमात्मा के चिंतन में लगा रहता है। बुद्धि भी जड़-पदार्थों में तन्मय न रहकर परमात्म ज्ञान में अधिक से अधिक सूक्ष्मदर्शी होकर दिव्य भाव में बदल जाती है। स्वयं का ज्ञान और तार्किक शक्ति इतनी बलवान नहीं होती कि मनुष्य निरंतर उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक के यथार्थ और दूरवर्ती परिणामों को आत्मा के अनुकूल होने का विश्वास दे सके। तर्क प्रायः व्यर्थ से दिखाई देते हैं। ऐसे समय जब अपने कर्मों के औचित्य या अनौचित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को परम प्रेरक शक्ति के हाथों सौंप देते हैं तो एक प्रकार की निश्चिंतता मन में आ जाती है। मन का बोझ हलका हो जाता है। जिसकी जीवन पतवार परमात्मा के हाथ में हो उसे किसका भय ? सर्वशक्तिमान से संबंध स्थापित करके ही मनुष्य निर्भय हो जाता है, उसके स्पर्श से ही मनुष्य में अजेय बल आ जाता है। व्यक्तित्व में सद्‌गुणों का प्रकाश और दिव्यता झरने लगती है। जीवन में आनंद झलकने लगता है। यह संबंध और स्पर्श जब तक कि पूर्ण प्राप्ति नहीं होती, तब तक श्रद्धा के रूप में प्रगट और विकसित होता है। वह एक प्रकार से पाथेय है इसलिए उसका मूल्य और महत्त्व उतना ही है जितना अपने लक्ष्य का, गंतव्य का अभीष्ट का, आत्मा, सत्य अथवा परमात्मा की प्राप्ति का।

परमात्मा के प्रति अत्यंत उदारतापूर्वक आत्म भावना पैदा होती है वही श्रद्धा है। सात्विक श्रद्धा की पूर्णता में अंतःकरण स्वतः पवित्र हो उठता है। श्रद्धायुक्त जीवन की विशेषता से ही मनुष्य स्वभाव में ऐसी सुंदरता बढ़ती जाती है, जिसको देखकर श्रद्धावान् स्वयं संतुष्ट बना रहता है। श्रद्धा सरल हृदय की ऐसी प्रीतियुक्त भावना है, जो श्रेष्ठ पथ की सिद्धि कराती है। इसीलिए शास्त्रकार कहते हैं—

भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा-विश्वास रूपिणौ।
याध्याँ बिन न पश्यन्ति सिद्धः स्वांतस्थमीक्ष्वरम्।।

(रामायण, बालकांड)

'हम सर्वप्रथम भवानी और भगवान्, प्रकृति और परमात्मा को श्रद्धा और विश्वास के रूप में वंदन करते हैं, जिसके बिना सिद्धि और ईश्वर-दर्शन की आकांक्षा पूर्ण नहीं होती।'

ज्ञान-भक्ति का निरूपण करते हुए तुलसीदास जी उत्तरकांड में लिखते हैं—

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई।
जो हरि कृपा हृदय बस आई।।
जप तप व्रत जम नियम अपारा।
जो श्रुति कह शुभ धर्म अचारा।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेई तृन हरित चरै जब गाई।
एहि विधि लेसै दीप तेजराशि विज्ञानमय।
जातहि जासु समीप जरहिं मदादिक सुलभ सब।।

जब तक मनुष्य के अंतःकरण में श्रद्धारूपी गाय का जन्म नहीं होता तब तक जप, तप, यम, नियम, व्रत आदि जितने भी धर्माचरण हैं, उनमें मनुष्य की बुद्धि स्थिर नहीं रहती। यह श्रद्धा ही जीवन की कठिनाइयों में मनुष्य को पार लगाती है और आत्मगुणों का विकास करती हुई, उसे विज्ञानयुक्त परमात्मा के प्रकाश तक जा पहुँचाती है।

श्रद्धा का आविर्भाव सरलता और पवित्रता के संयोग से होता है। पार्थिव वस्तुओं से ऊपर उठने के लिए सरलता और पवित्रता इन्हीं दो गुणों की अत्यंत आवश्यकता होती है। इच्छा में सरलता और प्रेम में पवित्रता का विकास जितना अधिक होगा, उतनी ही अधिक श्रद्धा बलवान होगी। सरलता द्वारा परमात्मा की भावानुभूति होती है और पवित्र प्रेम के माध्यम से उसकी रसानुभूति। श्रद्धा दोनों का सम्मिलित स्वरूप है। उसमें भावना भी है रस भी। जहाँ उसका उदय हो, वहाँ लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाई का अधिकांश समाधान तुरंत हो जाता है। अविश्वस्त व्यक्तियों के आगे थोड़ा-सा भी काम आ जाता है तो उससे उन्हें बड़ी हड़बड़ाहट होती है किंतु यदि उसी काम को साहस और भावना के साथ हाथ में लिया जाता है तो घबराहट और कठिनता भी आनंद में बदल जाती है। जो बोझ का काम प्रतीत होता था वही सरलता से प्राप्त कर लेने योग्य बन जाता है।

प्राचीन काल में पवित्र अंतःकरण वाले महान् पुरुषों द्वारा अज्ञान अंधकार में भटकते हुए लोक-जीवन को सत्यमार्ग पर अग्रसर करने का माध्यम उनके द्वारा जगाई हुई श्रद्धा ही होती रही है। शिष्यों को श्रद्धा का पूर्ण पाठ तथा साधना की स्थिरता के लिए तप भी आवश्यक था, युग और परिस्थितियाँ बदल जाने पर आज भी आवश्यक है। परमात्मा सत्य है, उसके गुण और स्वभाव अपरिवर्तनशील हैं, इसी तरह वहाँ तक पहुँचने का मार्ग और माध्यम भी अपरिवर्तित ही है। उसे आज भी पाया और अनुभव किया जा सकता है, पर उस स्थिति की परिपक्वता के बीच में जो साधनाएँ,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवर्तन, हलचल, कठिनाइयाँ और दुरभिसंधियाँ आती हैं, उनके लक्ष्य प्राप्ति की भावना की स्थिरता के लिए श्रद्धा आवश्यक है।

श्रद्धा तप है। वह ईश्वरीय आदेशों पर निरंतर चलते रहने की प्रेरणा देती है। आलस से बचाती है। कर्त्तव्यपालन में प्रमाद से बचाती है। सेवा धर्म सिखाती है। अंतरात्मा को प्रफुल्ल, प्रसन्न रखती है। इस प्रकार के तप और त्याग से श्रद्धावान व्यक्ति के हृदय में पवित्रता एवं शक्ति का भंडार अपने आप भरता चला जाता है। गुरु कुछ भी न दे तो भी श्रद्धा में वह शक्ति है, जो अनंत आकाश से अपनी सफलता में तत्त्व और साधन को आश्चर्यजनक रूप से खींच लेती है। ध्रुव, एकलव्य, अज, दिलीप की साधनाओं में सफलता का रहस्य उनके अंतःकरण की श्रद्धा ही रही है। उनके गुरुओं ने तो केवल उसकी परख की थी। यदि इस तरह की श्रद्धा आज भी लोगों में आ जाए तो लोग पूर्ण रूप से परमात्मा की इच्छाओं पर चलने को कटिबद्ध हो जाएँ तो विश्व शांति, चिर-संतोष और अनंत समृद्धि की परिस्थितियाँ बनते देर न लगे। उसके द्वारा सत्य का उदय, प्राकट्य और प्राप्ति तो अवश्यंभावी हो जाता है। इसी बात को शास्त्रों में संक्षेप में इस प्रकार कहा गया है।

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञान लब्ध्वा परां शांतिमचिरेणधिगच्छति।।

(गीता)

"जितेंद्रिय तथा श्रद्धावान पुरुषों को ही ज्ञान मिलता है और ज्ञान से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। सत्य समुपलब्ध होता है।"

भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वासरूपिणौ—

आदि शक्ति गौरी को श्रद्धा और देवाधिदेव परमात्मा को विश्वास के रूप में भजन करने वाला सिद्धि प्राप्त करता है। बाइबिल की मान्यता है विश्वासपूर्वक की गई प्रार्थना बीमार को भी स्वस्थ कर देती है (एंड दि ऑफ फेथ शैल सैव दि सिक)।

हमारे देश में यह विश्वास जनजीवन में गहराई तक घुला हुआ है कि विश्वासपूर्वक की गई ईश्वरीय प्रार्थनाएँ चमत्कारिक लाभ देती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं तथापि आज का तर्कवादी जगत पश्चिम के उदाहरण देकर कहता है यह मान्यताएँ विभ्रम हैं। लोग यह नहीं जानते कि जिन बातों को इस देश का अंधविश्वास कहा जाता है, उन्हीं को पश्चिम में विज्ञान की भाँति मानते और लाभ प्राप्त करते हैं।

अमरीका के सीनेटर एडवर्ड डिक्शन के जीवन की एक घटना है। १९४७ में अचानक उनकी दाईं आँख की रोशनी जाती रही। डॉक्टरों ने उस आँख को निकलवा देने की सलाह दी। डिक्शन को यह शब्द वाण की तरह हृदय में चुभ गए। सोचने लगे यदि मनुष्य इतना बेबस है तो भगवान ने उसे बनाया ही क्यों ? दुःख और निराश्रित अवस्था न आती तो मनुष्य आध्यात्मिक सत्यों को कहाँ समझता ? भगवान की याद आते ही उन्हें याद आए यह शब्द—प्रेयर इज ए डायरेक्ट पाइपलाइन टु गाड" प्रार्थना परमात्मा तक पहुँचने का सीधा मार्ग है।" उन्होंने डॉक्टर की बात अमान्य कर दी। एक बार रात में वे अत्यंत दुःखी होकर भगवान की प्रार्थना के लिए बैठे। एक क्षण के लिए आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई। उस क्षण की सुखद अनुभूति को जब तक स्मरण करें समाधि टूट गई और उन्होंने एक सुखद आश्चर्य अनुभव किया कि उनकी आँख की रोशनी लौट आई है और अब वे पहली आँख से भी अधिक साफ देख सकते थे।

केंटकी के तशबरी कालेज के एक छात्र को समाचार मिला—तुम्हारी माँ मरणासन्न स्थिति में है। डॉक्टरों ने घोषित कर दिया है कि मृत्यु दो-ढाई घंटे से अधिक नहीं टल सकती। डा० एल्सन इस घटना का विवरण देते हुए लिखते हैं—यह समाचार पाते ही लड़का वहाँ गया जहाँ अपने राष्ट्रपति के जीवनकाल में श्री आयजेन होवर और उनकी धर्मपत्नी नित्य प्रार्थना किया करते थे। युवक ने भरे अंतःकरण से परमात्मा से प्रार्थना की—प्रभो ! माँ को अब आप ही अच्छा कर सकते हैं। जिस समय विद्यार्थी इधर प्रार्थना कर रहा था ठीक उसी समय उधर इसकी माँ की स्थिति में सुधार हुआ, डाक्टरों ने परीक्षा की। सब कुछ अस्वाभाविक गति से बदल रहा है शरीर का कष्ट दूर हो रहा है। डॉक्टर एक-दूसरे का मुहँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ताक रहे थे और कह रहे थे 'गाड इज द वैरी विग डाक्टर' भगवान बड़ा भारी डाक्टर है। माँ अच्छी हो गई और काफी दिन तक स्वस्थ जीती रही।

'दि मैन इन द नेक्स्ट रूम' (बगल के कमरे का आदमी) शीर्षक अध्याय में अपनी पुस्तक 'सत्य की खोज' (ए सर्च ऑफ ट्रूथ) में श्रीमती रूथ मांट गुमरी ने लिखा है—मैं अस्पताल में थी। मेरे बगल के कमरे में एक मरीज के जोर-जोर से खाँसने की आवाज आ रही थी। नर्स ने बताया—"बेचारा यक्ष्मा से पीड़ित है आज रात किसी भी समय उसकी मृत्यु हो सकती है।" यह सुनते ही मुझे बड़ा दुःख हुआ। लेटे-लेटे परमात्मा से प्रार्थना करने लगी—हे प्रभु ! इस बीमार को नया जीवन दो—प्रार्थना करते-करते न जाने कब नींद आ गई। प्रातःकाल उठी तो रोगी की खाँसी की आवाज नहीं सुनाई दी। नर्स को बुलाकर पूछा—नर्स ने बताया—रोगी अच्छा हो रहा है। जिस दिन मैं अस्पताल से छूटी, उसी दिन उसे भी ओ० के० सर्टिफिकेट देकर अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

श्रद्धा विश्वासपूर्वक की गई ईश्वर-प्रार्थना से कुछ भी असंभव नहीं।

श्रद्धा सत्य माप्यते—

जीवन को किसी निर्दिष्ट ढाँचे में ढाल देने वाली, सबसे प्रबल एवं उच्चस्तरीय शक्ति श्रद्धा है। यह अंतःकरण की दिव्यभूमि में उत्पन्न होकर समस्त जीवन को हरियाली से सजा देती है। श्रद्धा का अर्थ है श्रेष्ठता के प्रति अटूट आस्था। यह आस्था जब सिद्धांत एवं व्यवहार में उतरती हैं तो उसे निष्ठा कहते हैं। यही जब आत्मा के स्वरूप, जीवन एवं ईश्वर भक्ति क्षेत्र में प्रवेश करता है तो श्रद्धा कहलाती है।

आत्म कल्याण चाहने वाले के लिए और ईश्वर प्राप्ति के विभिन्न प्रयासों के लिए इस शक्ति का उभार अवलंबन आवश्यक है। इसके बिना उस महान लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। अपने अंतरात्मा में बैठे हुए परमात्मा को देखने, उसे प्राप्त करने का उपाय बताते हुए मनीषियों ने इसी श्रद्धा की गरिमा को प्रस्तुत किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रामचरितमानस में श्रद्धा को भवानी और विश्वास को शंकर बताया गया है। इन्हीं दोनों की सहायता से भगवान को प्राप्त किया जा सकता है।

श्रद्धा के अभिसिंचन से पत्थर में देवता का उदय किया जा सकता है। हिंदू संस्कृति में प्रतिभा प्रतिस्थापित करने तथा उनकी पूजा-उपासना करने का दर्शन इसी श्रद्धातत्त्व पर आधारित है। अपने इष्ट के प्रति अटूट श्रद्धा आरोपित करके ही उपासक, उसके साथ अनन्य एकता स्थापित कर लेते हैं। ईश्वर, कर्मफल, जीवनोद्देश्य कर्त्तव्यपालन, आत्मा की गरिमा जैसे सत्य तथ्यों पर सघन श्रद्धा रखने वाले लोग ही सामान्य जीवन से उठकर, महामानवों, देवदूतों की पंक्ति में बैठ सकते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र की उच्चस्तरीय साधनाओं में श्रद्धा की ही अपरिमेव शक्ति काम करती है। श्रद्धाहीन कर्मकांड तो सामान्य अंग संचालन के व्यायाम के समान ही लाभप्रद हो सकते हैं, किंतु वे ही श्रद्धा और विश्वास के आधार पर साधना के लक्ष्य प्राप्ति में सिद्धिदायक सिद्ध होते हैं। श्रद्धा भावना न केवल उपासनात्मक क्षेत्र में वरन् जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा उद्देश्य को भी प्रभावित करती है।

जिन लोगों की आस्था मानवीय जीवन की श्रेष्ठता तथा महानता में नहीं होती, वे इसे पशुवत पेट भरने एवं प्रजनन के सुखों तक ही सीमित रखते हैं। उनकी यह अनास्था मानवीय समाज के प्रति अविश्वास ही उत्पन्न करती है।

आस्थाओं की कमी के कारण ही अगणित समस्याएँ तथा विविध-विधि उलझनें खड़ी होती और समाज व्यवस्था को विचलित करती हैं। आदर्शों और मर्यादाओं की उपेक्षा होने से ही व्यक्तिगत जीवन में दुष्टता, उद्दंडता और सामाजिक जीवन में भ्रष्टता, अनैतिकता, अव्यवस्था पनपती जा रही है। इस विकट परिस्थिति में समाज में रहने वाला हर व्यक्ति स्वयं को विपन्न तथा असुरक्षित पाता है। साधनों की विपुल मात्रा और सुखोपभोग के कुबेर जैसे भंडार भी उसे तृप्त नहीं कर सकते, क्योंकि शरीर की अपनी सीमा मर्यादा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केवल उसके ही सुखों की तृष्णा की पूर्ति में जुट पड़ने वालों का भौतिक जीवन तो व्याधिग्रस्त बनता ही है, अंतःकरण क्षेत्र भी शुष्क, नीरस, भावना विहीन, चिंताग्रस्त, द्वेष और आवेशग्रस्त हो जाता है। इस तरह के व्यक्तियों की स्थिति प्रेत-पिशाच से कम नहीं होती। स्पष्ट है यह स्थिति कितनी भयंकरता उत्पन्न कर सकती है। आज पश्चिमी देशों में यही सब हो रहा है।

मनुष्य स्थूल कम सूक्ष्म अधिक है। वह भावनाओं के सहारे पैदा होता, भावनाओं में ही जीवित रहता और भाव जगत में ही विलीन होता है। भावनाओं के प्रति सम्मान ही श्रद्धा है। यह संवेदना जहाँ भी होगी वहीं संतोष की निर्झरिणी प्रवाहित हो रही होगी, भगवान् कृष्ण ने कहा है—

सत्वानुरूपा सर्वस्व श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धा मयोऽयं पुरुषो या यच्छ्रद्ध स एव सः।।

(गीता—१७।३)

अर्थात्—हे अर्जुन ! यह सृष्टि श्रद्धा से विनिर्मित है, जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वह पुरुष वैसा ही बन जाता है अर्थात् बुराइयों के प्रति श्रद्धा व्यक्ति को समस्याओं में कैद कर देती है तो आदर्शों के प्रति आस्था मनुष्य जीवन को सुख-शांति और प्रसन्नता से भर देती है। श्रद्धा में ही व्यक्तित्व के परिष्कार की वास्तविक सामर्थ्य है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रद्धाहीन बुद्धिवाद अभिशाप ही है

आज का युग बुद्धि-युग कहा जाता है। मनुष्य पूरी तरह से बुद्धिवादी बन गया है। प्रत्येक व्यवहार को बुद्धि की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करना चाहता है, यह बुरा नहीं। बुद्धिमान होना मनुष्य की शोभा है। अन्य प्राणियों से बुद्धि में बढ़ा-चढ़ा होने से ही मनुष्य उन सबसे श्रेष्ठ माना गया है किंतु आज के बौद्धिक चमत्कारों के जो फल हमारे सामने आ रहे हैं, वे बड़े ही निराशाजनक तथा भयप्रद हैं।

बुद्धिमान होना अच्छा है किंतु बुद्धिवादी होना उतना अच्छा नहीं है। आज हम अपने को विगत युगों के मानवों से अधिक बुद्धिमान तथा सभ्य मानते हैं। आज हम अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों पर गर्व करते हैं और कहते हैं कि हमने अपने पूर्वकालीन पूर्वजों से अधिक उन्नति और विकास किया है। यह ठीक है कि आज के मनुष्य ने उन्नति की है, किंतु यांत्रिक क्षेत्र में, मानवता के क्षेत्र में नहीं। जब तक हम बुद्धि के बल पर मानव मूल्यों की प्रतिस्थापना नहीं करते, सही मानों में बुद्धिमान कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते।

किसी ओर भी दृष्टि डालकर देख लीजिए, प्रश्नों, परेशानियों, समस्याओं तथा असमाधानों के ही दृश्य दिखाई देते हैं। न कोई प्रसन्न दीखता है और न निश्चिंत। संशय, भय, आशंका मानव अस्तित्व को घेरे हुए दृष्टिगोचर होंगे। सुबह से शाम तक यंत्र की तरह काम करता हुआ भी मनुष्य न तो आश्वस्त दीखता है और न अभाव मुक्त।

लोग बड़े उत्साह से जीवन क्षेत्र में उतरते हैं, किंतु कुछ ही समय में उन्हें अनुभव होने लगता है कि उनके उत्साह के लिए संसार में कोई मार्ग नहीं है और तब वह उतरे हुए ज्वार की तरह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिमटकर एक संकुचित सीमा में धीरे-धीरे, थका-थका, रेंगता हुआ चलने लगता है। मानो न वह जी रहा है और न जीना चाहता है। ज्यों-त्यों मिली हुई श्वांसों का बोझ उतार रहा है। यह सब निराशा एवं अवसाद, बुद्धि का फल नहीं है बल्कि बुद्धिवादिता की देन है। केवल बुद्धिवादी बने रहने से मनुष्य में एक नीरसता, शून्यता का आ जाना स्वाभाविक ही है।

किंतु इस मानवीय क्षति की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता। साक्षरता, शिक्षा, विद्या, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, प्रशिक्षण केंद्रों तथा वैज्ञानिक संस्थानों को दिनोंदिन बढ़ाया जा रहा है। किसलिये ? जिससे कि मनुष्य अधिक से अधिक बुद्धिमान बने, अपने जीवन में विकास करे और समाज की उन्नति में सहायता दे। किंतु इन प्रयत्नो के परिणामों पर कोई सोचने को तैयार नहीं दीखता। भौतिक उपलब्धियों के पीछे मनुष्य को इस सीमा तक डाल दिया गया है कि यह सोच सकना उसकी शक्ति के परे की बात हो गई है कि इन भौतिक उपलब्धियों का उद्देश्य केवल उपलब्धि ही नहीं है। इनका उद्देश्य है, इनके द्वारा मानवता का दुःख दर्द दूर करना, उसके अभावों तथा समाधानों का निराकरण करना, किंतु इस वांछित बुद्धि को जगाने के बजाय जगाई गई है—एक सर्वभक्षी होड़ एक आर्थिक प्रतिस्पर्धा जिसका फल यह हो रहा है कि मनुष्य-मनुष्य को कुचलकर भौतिक उन्नति में आगे निकल जाना चाहता है। जीवन के मूल उद्देश्य मानव के प्रति मानव का स्नेह, अनुशासन, सेवा, सहयोग, सहायता तथा बंधुभाव का सर्वथा अभाव होता जा रहा है। संसार में दीखने वाली व्यग्रता, व्यस्तता तथा आपाधापी इसी अभाव की विकृतियाँ हैं। विद्यार्थी पढ़ते हैं अपने लिए मनुष्य परिश्रम करता है अपने लिए, व्यापार करता है तो अपने लिए, तात्पर्य यह है कि वह जो कुछ करता है, सब अपने लिए जो कुछ चाहता है सब अपने लिए। इसे 'अपने लिए' ने मनुष्य को इतना शुष्क तथा संकीर्ण बना दिया है कि उसकी सारी मन बुद्धि अपने तक ही सीमित हो गई है, जिससे स्वार्थ-संघर्षों के फलस्वरूप समाज में शोक-संतापों की वृद्धि होती जा रही है। आज आपा बढ़ाना ही मनुष्य ने अपनी बुद्धि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकास का लक्ष्य बना रखा है। यह सब स्वार्थपूर्ण बुद्धिवाद का ही विकार है।

जिस परमात्मा के सर्वोत्कृष्ट प्रसाद बुद्धि का उपयोग मानव मूल्यों को बढ़ाने में किया जाना चाहिए था, उसका उपयोग निकृष्ट से निकृष्ट स्वार्थ साधनों में किया जाने लगा है। अनैतिकता पर परदे के रूप में दूसरों के अधिकार अपहरण करने में पटुता के रूप में अपने अनधिकृत स्वार्थ सिद्धि में, सकुशलता के रूप में, आय के अनुचित साधन बढ़ाने के लिए चतुराई के रूप में बुद्धि का उपयोग कर सकना ही बुद्धिमत्ता की परिभाषा बन गई है। ऐसा नहीं कि इस अमानवीय मान्यता के कुफल न भोगने पड़ते हों। खूब अच्छी तरह भोगने पड़ रहे हैं, किंतु युग की विशेषता बुद्धिवादिता के कारण धारणा बदलने को तैयार नहीं। अपने ही कारण अपने पर आए दुःख कष्टों का हेतु दूसरों को मान लेना और उसका बदला तीसरे से लेने का प्रयत्न करना बुद्धिवादिता की विशेष प्रेरणा बन गई है।

आज एक और सौभाग्य से जहाँ मनुष्य की बुद्धि ने विस्मयकारक विकास किया है, वहाँ दूसरी ओर दुर्भाग्य से उनका नियंत्रण तथा सदुपयोग का भाव शिथिल हो गया है। बुद्धि का तीव्र विकास जितना लाभकारी है, उससे कहीं अधिक हानिकारक उनका अनियंत्रण तथा असंयमित होना है। यही कारण है कि आज बुद्धि के चमत्कारी वैज्ञानिक अनुसंधान मनुष्य के सिर मृत्यु की छाया की तरह मँड़राते नजर आते हैं। यहीं पर यदि मनुष्य की विचारधारा नियंत्रित भी हो सकी होती तो यह वैज्ञानिक उपलब्धियाँ सुख और संतोष के वरदान होतीं। पर बुद्धिवाद से अभिशापित मनुष्य का विश्वास मनुष्य पर से उठता जा रहा है।

पूर्वकालीन मानवों से अपने को अधिक बुद्धिमान मानने तथा सभ्य एवं विकासशील कहने वाले यह नहीं सोच पाते कि अपेक्षाकृत कम बुद्धिमान होने पर भी वे एक-दूसरे की तरह आज की भाँति खतरा नहीं बने हुए थे। उनमें आपस में कितना सौहार्द्र, स्नेह तथा सहयोग रहा है ? उनका समय आज के समय से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कितना निश्चित तथा समाधान पूर्ण था ? यही कारण है कि उस समय जिस प्रकार अध्यात्म पूर्ण मानवता का विकास हुआ है उसका शतांश भी आज देखने को नहीं मिल रहा है। जो सभ्यता, संस्कृति, कला-कौशल तथा परोपकार एवं पारस्परिकता की भावना पूर्वकालीनों ने संसार को दी थी, हम बहुत कुछ उसी के आधार पर चलते हुए आज इतना बढ़ पाए हैं। जहाँ पूर्वकालीनों ने विचार करके सभ्यता के संदेश सारे संसार को देकर प्रबुद्ध बना दिया था, वहाँ आज लगभग पूरा संसार सभ्य होकर मानवीय सभ्यता के विनाश पर तुल गया है। संसार के अधिक सभ्य एवं प्रबुद्ध होने से तो सुख-शांति की संभावनाओं की वृद्धि होनी चाहिए थी, वहाँ भय, शोक और संताप ही बढ़े हैं। यह सब नीरस एवं अनियंत्रित बुद्धिवाद का ही कुपरिणाम है।

अब प्रश्न यह है कि आज के इस बुद्धि-विकास के युग में इन विकृतियों का कारण क्या है और क्या है इनके समाधान का उपाय ? अब वह समय आ गया है जबकि मनुष्य को रुक कर सोचना, विचार करना आवश्यक हो गया अन्यथा बुद्धिवाद से हाँका हुआ संसार शीघ्र ही अपना विनाश कर लेगा।

इसी आत्मिक अश्रद्धा के कारण उसके हृदय से आत्मीयता का भाव उठ गया है। उसे किसी दूसरे के प्रति न तो सहानुभूति रह गई है और न स्नेह उसमें एक शुष्क स्वार्थ का बाहुल्य हो गया है। अधिक बुद्धि पाकर यदि वह अपने से कम बुद्धि वालों के प्रति अपने कर्त्तव्य समझ उनको अपने साथ ले चलने की नैतिकता के प्रति श्रद्धावान हो सकता तो निश्चय ही, जहाँ संसार में आज संशय, भय, विश्वास एवं असमाधान दीखता है, वहाँ आश्वासन, प्रसन्नता, विश्वास तथा सुख समाधान की ही परिस्थितियाँ दीखतीं।

अश्रद्धावान व्यक्ति में स्वभावतः ही स्वार्थ, असंतोष तथा अतृप्ति का दोष उत्पन्न हो जाता है। श्रद्धा ही एक ऐसा प्रकाश है, जो मनुष्य को अनात्मिक-अंधकार में खोने से बचाए रहता है। श्रद्धावान को जहाँ अपने प्रति स्नेह रहता है, वहाँ दूसरों के प्रति भी आज के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुध्यातिरेकता के युग में इसी श्रद्धा नामक मानव मूल्य का अभाव हो गया है। जिस दिन मनुष्य में श्रद्धा के भाव की बहुलता हो जाएगी—बुद्धिवादिता का नियमन होगा, तब आज के ध्वसंसूचक बौद्धिक चमत्कार सृजन संबंधी वरदान बन जाएँगे।

बुद्धि का नियमन कीजिए—

मनुष्य को परमात्मा ने बुद्धि नामक एक अतुलनीय शक्ति प्रदान की है; इसी के आधार पर मनुष्य लाखों करोड़ों अन्य प्राणियों के बीच सृष्टि का अप्रतिम स्वामी बना है। इतना ही नहीं, मनुष्य ने बुद्धि बल पर संसार को सुंदर से सुंदर बनाया है। बिना किसी के बतलाए उसने सृष्टि के गोपनीय रहस्यों को बुद्धि बल पर खोज निकाला है। जीवन में न जाने कितनी सुख-सुविधाओं का समावेश किया है।

मनुष्य ने अतीत का अध्ययन कर उसके व्यवहारों, मान्यताओं एवं धारणाओं के हानि-लाभ को समझकर नित्य नए भविष्य के लिए पथ-प्रशस्त करते हुए महान् से महानतर सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का सृजन किया है। संसार में प्रत्यक्ष सुंदर कला-कृतियाँ, ऊँचे-ऊँचे महल, दुर्ग, प्रासाद तथा अट्टालिकाएँ, यान, जलयान-वायुयान जो कुछ भी विस्मयकारक तथा लाभकारक दिखाई दे रहा, वह सब मनुष्य की बुद्धि शक्ति का ही चमत्कार है।

बुद्धि ने मानव को केवल भौतिक विभूतियों तक ही ले जाकर नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसने उसे आत्मा-परमात्मा, पुरुष और प्रकृति के रहस्यों तक भी पहुँचा दिया है। सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय चेतनाएँ, पारस्परिक व्यवहार, कर्त्तव्य एवं अधिकारों का ज्ञान बुद्धि ने ही कराया है।

बुद्धि की शक्ति का एक उज्ज्वल पक्ष तो यह रहा। इस शक्ति का एक अंधेरा पक्ष भी है। आक्रमण, अत्याचार, अन्याय, उत्पीड़न, शोषण, लाभ-लोभ, छल-कपट, वंचना-प्रताड़न, विजय, आतंक, अभियान, नोंच-खसोंट लूट-मार, छीना-झपटी, चोरी-मक्कारी, ध्वंस अथवा विनाश की आसुरी वृत्तियाँ भी मनुष्य, बुद्धि बल पर ही सफल करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य शारीरिक बल से नहीं, बुद्धि-बल से ही अभियानों का संचालन और सेनाओं का नियंत्रण करता है। बड़ी-बड़ी लड़ाइयों की हार-जीत बुद्धि-बल पर ही निर्भर करती है। राष्ट्रों के नेतृत्व और राज्यों के शासन-व्यवस्था के काम भी बुद्धि-शक्ति से ही चलते हैं। व्यापार, व्यवसाय उद्योग योजनाएँ एवं उपाय सब बुद्धि के अधीन रहते हैं। तात्पर्य यह है कि संसार में जो कुछ सृजनात्मक अथवा ध्वंसात्मक क्रिया-कलाप होता दिखाई देता है, वह सब बुद्धि से ही संचालित एवं नियंत्रित होता है। बुद्धि एक अनुपम एवं अतुलनीय सर्व समर्थ शक्ति है।

आज के वैज्ञानिक युग में तो मानव-बुद्धि चमत्कारिक क्षमता से संपन्न हो गई है। असंभव जैसे कार्य आज संभव होते दिखाई दे रहे हैं। मनुष्य की बुद्धि आज जीवन-मृत्यु के रहस्यों को खोज निकालने पर तुली हुई है। संसार के कारण भूत पंच-तत्त्वों पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपना आज्ञाकारी बना रही है। प्रकृति की पराधीनता से मुक्त होकर मानव आज बुद्धि-बल पर स्व-निर्भर होने का प्रयत्न कर रहा है। प्रगति देखते हुए यह बात असंभव नहीं दिखाई देती कि जब वह जिस ऋतु को चाहे उत्पन्न कर ले और जब जिस वातावरण को चाहे निर्माण कर ले। आज का युग मानवीय बुद्धि-शक्ति का प्रमाण सूचक साक्षी बना हुआ है।

ऐसी अमोघ है मानव बुद्धि की शक्ति ! यदि यह चाहे तो संसार को दो दिन में ही नष्ट कर दे और चाहे तो इसे स्वर्ग बना दे ! किंतु आज की परिस्थितियाँ देखते हुए ऐसा नहीं लग रहा है कि बुद्धि-शक्ति संसार को स्वर्ग रूप में परिणत करेगी। इसके अधिकाधिक नरक बनने की संभावनाएँ अवश्य दृष्टिगोचर होने लगी हैं। आगे की बात तो छोड़ दीजिए, आज के दिन भी संसार एक नरक से क्या कम बन गया है ? जिधर देखो, दुःख-पीड़ा, शोक-संताप, आवश्यकता एवं अभाव का ही तांडव होता दृष्टिगोचर हो रहा है। मनुष्य, मनुष्य के लिए भूत-प्रेतों की तरह शंका का स्वरूप बना हुआ है। सुख-सुविधा के अगणित साधन-संचय हो जाने पर भी मनुष्य को उनका कोई लाभ नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिल रहा है। जिस एक अश्वस्तता एवं निश्चिंतता प्राप्त करने के लिए मनुष्य की बुद्धि तन-मन से लगी हुई है, उसके दर्शन भी संभव नहीं हो रहे हैं। निःसंदेह आज के युग का बुद्धि बलिष्ठ मनुष्य की यह दुर्दशा तरस का ही विषय है।

अब एक प्रश्न मन में उठे बिना नहीं रहता। क्या कारण है कि जो समर्थ बुद्धि आकाश-पाताल को मिला देने की क्षमता रखती है, उस बुद्धि का मानव मस्तिष्क में आज चरम-विकास हो रहा है, किंतु वह वंचित उन सुखों से भी होता जा रहा है, जो उसने कम बुद्धि के युग में उपभोग किये थे। वह उल्टा परिणाम कुछ कम विस्मयकारक नहीं है। इस पर शांत मस्तिष्क से विचार करने की नितांत आवश्यकता है।

बात वास्तव में यह है कि मनुष्य ने आज बुद्धि को तो विकट रूप से बढ़ा लिया है, किंतु उस पर नियंत्रण करना नहीं सीखा है, उचित नियंत्रण के अभाव में यह निरंकुश मातंगिनी अथवा अतट-तटिनी की भाँति चारों ओर ध्वंस के दृश्य उपस्थित करती दृष्टिगोचर हो रही है। बुद्धि-शक्ति में कोई मर्यादा तो होती नहीं। स्वयं मनुष्य को ही अपनी इस शक्ति को नियंत्रित करना होता है।

बुद्धि का अनियंत्रित विकास केवल दूसरों के लिए ही दुःखदायी नहीं होता, स्वयं अपने लिए भी हानिकारक होता है। अति बुद्धि मानव को चिंतन असंतोष की ज्वाला में ही जलना होता है। वह बहुत कुछ पाकर भी कुछ नहीं पाता। एक बुद्धिवादी कितना ही शास्त्रज्ञ, विशेषज्ञ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, तत्त्ववेत्ता आदि क्यों न हो बुद्धि का अहंकार उसके हृदय में शांति को न ठहरने देगा। वह दूसरों को ज्ञान देता हुआ भी आत्मिक शांति के लिए तड़पता ही रहेगा। बुद्धि की तीव्रता पैनी छुरी की तरह किसी दूसरे अथवा उसको दिन रात काटती ही रहती है। मानव की अनियंत्रित बुद्धि-शक्ति मनुष्य जाति की बहुत बड़ी शत्रु है। अतएव बुद्धि के विकास के साथ-साथ उसका नियंत्रण भी आवश्यक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी शक्तिशाली का नियंत्रण तो उससे अधिक शक्ति से ही हो सकता तब भला समग्र सृष्टि को अपनी मुट्ठी में शक्ति बुद्धि का नियंत्रण करने के लिए कौन-सी दूसरी शक्ति मनुष्य के पास हो सकती है ? मनुष्य की वह दूसरी शक्ति है—श्रद्धा ! जिससे बुद्धि जैसी उच्छृंखल शक्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है, उसका नियंत्रण किया जा सकता है। ध्वंस की ओर जाने से रोक कर सृजन के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। श्रद्धा के आधार के बिना बुद्धि एक बाबले बबंडर से अधिक कुछ भी नहीं है। श्रद्धा रहित बुद्धि जिधर भी चलेगी उधर दुःखद परिस्थितियाँ ही उत्पन्न करेगी।

विशुद्ध बुद्धिवादी के पास स्नेह, सौजन्य, सौहार्द्र, सहानुभूति, भ्रातृत्व भाव जैसी कोमलताएँ नहीं होती। इन मानवीय गुण की जननी श्रद्धा ही है। श्रद्धालु अंतःकरण वाला मनुष्य सेवा-सहयोग, क्षमा-दया, परोपकार तथा परमार्थ में विश्वास करता है, न्याय और नियम उसकी विशेषताएँ हुआ करती हैं।

मानवता के इतिहास मे दो परस्पर विरोधी ख्याति के व्यक्तियों के नाम पाए जाते हैं। एक वर्ग तो वह है, जिसने संसार को नष्ट कर डालने, जातियों को मिटा डालने तथा मानवता को जला डालने का प्रयत्न किया है। दूसरा वर्ग वह है जिसने मानवता का कष्ट दूर करने, संसार की रक्षा करने देश और जातियों को बचाने के लिए तप किया है। संघर्ष किया है और प्राण दिया है। इतिहास के पन्नों पर आने वाले यह दोनों वर्ग निश्चित रूप से बुद्धि-बल वाले रहे हैं। अंतर केवल यह रहा है कि श्रद्धा के अभाव में एक की बुद्धि शक्ति अनियंत्रित होकर बर्बरता का संपादन कर सकी है और दूसरे का बुद्धि बल श्रद्धा से नियंत्रित होने से सज्जनता का प्रतिपादन करता रहा है।

यदि आज की चमत्कारिणी बुद्धि का ठीक दिशा में उपयोग करना है, संसार से दुःख-दर्दों को मार भगाना है, अपनी धरती-माता को स्वर्ग बनाना है, मानव सभ्यता की रक्षा के साथ-साथ उसका विकास करना है, तो अंतःकरण में श्रद्धा की प्रतिस्थापना करनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगी। बिना श्रद्धा के मनुष्य की बुद्धिशक्ति उसकी शत्रु बनकर मानवता का विनाश किए बिना नहीं मानेगी। आज अवसर है, साधन हैं, मनुष्य चाहे तो सृजन का देवदूत बन सकता है और चाहे तो शैतान का अनुचर !

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावनात्मक गरिमा की मापदंड श्रद्धा

बौद्धिक क्षमता को किन्हीं गणितीय सूत्रों से किसी सीमा तक आँका-नापा जा सकता है। उसकी उपलब्धियों के नियम आँकड़ों की भाषा में भी समझे जा सकते हैं। स्मरण-शक्ति, रचना शक्ति, क्रिया-शक्ति, भाषागत क्षमता, भाषण क्षमता, लेखन क्षमता, संगठन क्षमता, अनुसंधान-विश्लेषण क्षमता तथा गुत्थियों को सुलझाने वाली क्षमताएँ माप की परिधि में नहीं मापी जा सकती। श्रद्धा-आस्था, भावना की क्षमताएँ गणितीय रूप में नहीं मापी जा सकतीं। उनके परिणाम भी गणितीय नियम-सूत्रों के अनुसार नहीं होते। इसलिये वे चमत्कारिक लगती हैं।

अपने किसी मित्र की मृत्यु हुई। डॉक्टर की दृष्टि में उसके दिल का धड़कना बंद हुआ अथवा दिमाग की नस फट गई। रासायनिक विश्लेषणकर्त्ता की दृष्टि से मरण का अर्थ शरीरगत रासायनिक प्रक्रिया में असंतुलन और अवरोध उत्पन्न हो गया। पर उस मरण से अपने अंतःकरण पर जो मार्मिक प्रतिक्रिया हुई, उसके फलस्वरूप भावी जीवन का सारा चिंतन एवं क्रियाकलाप ही बदल गया, इसका आधार क्या है इसे बता सकने में न तो डाक्टर समर्थ है और न रसायनवेत्ता। भौतिक विज्ञानी केवल पदार्थों की स्थिति का विवेचन विश्लेषण करते हैं। वे उस भावनात्मक उथल-पुथल की व्याख्या करने में अपने को असमर्थ पाते हैं, जो मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती है।

कोई यात्री सुदूर समुद्र पार किसी जलयान या वायुयान पर चढ़कर चला गया। यातायात विभाग के अधिकारी और वाहन कर्मचारी इसे एक व्यक्ति का स्थानांतर मात्र कहेंगे और उसे यांत्रिक अथवा आर्थिक प्रयोजनों के लिए घटित हुई एक मध्यवर्ती क्रिया मात्र कहेंगे। पर उस यात्री और उसके स्नेही को जो वियोग-व्यथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंदोलित किए डाल रही है उसकी व्याख्या इन लोगों के पास क्या है ? और वे उस अंतर्वेदना के समाधान का क्या उपाय प्रस्तुत कर सकते हैं ?

चंद्रमा एक निर्जीव पिंड है पर चकोर से लेकर कवियों तक पर जो भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ होती हैं वे क्या हैं और क्यों हैं ? पुष्प की व्याख्या कोई वनस्पति विज्ञानी एक पादप अवयव के रूप में ही कर सकता है। उसकी समीपता से दृष्टि को जो सौंदर्य बोध होता है, वह एक-दूसरे के उपहार प्रस्तुत करते समय वह पुष्प किन संवेदनाओं का आदान-प्रदान करता है, इनका विवेचन विज्ञानी के बस से बाहर की चीज है।

तरुण नारियों में से एक के साथ पवित्र तथा दूसरों के साथ वासनात्मक द्रष्टि क्यों उभरती है, उसका उत्तर शरीर विज्ञानी क्या दे सकते हैं ? आदर्शों के लिए आत्मा रक्षा और स्वार्थ संग्रह को छोड़कर लोग प्राण संकट तक का स्वागत करते हुए त्याग-बलिदान के उदाहरण क्यों उपस्थित करते हैं, इसका उत्तर मनोविज्ञान के पास—गणी की मूल प्रवृत्तियों का विवेचन करने वालों के पास क्या हो सकता है ?

सौंदर्य क्या है ? आँखें जिन वस्तुओं और प्राणियों को सुंदर या कुरूप मानती हैं, उनका कुछ आधार विज्ञान नहीं बता सकता। नैतिकता, कर्त्तव्य निष्ठा, सौंदर्य, धर्म, आदर्श, संयम, उदारता जैसी आस्थाओं के लिए विज्ञान की उपलब्धियाँ कुछ प्रकाश डाल सकने में अपने को असमर्थ पाती हैं।

विज्ञान की दृष्टि से मनुष्य शरीर मात्र कुछ रासायनिक तत्त्वों का, जीवाणुओं का, संयोजन, उत्पादन मात्र है। उसका संयोग-वियोग ही जीवन अथवा मृत्यु है। इस मान्यता के आधार पर वे परखनली और टैस्टट्यूबों में कृत्रिम जीवधारियों के निर्माण में संलग्न है। इतना संभव होने पर भी यह प्रश्न बना ही रहेगा कि उस प्राणधारी उत्पादनों में मात्र वैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व, चरित्र, विवेक एवं उत्कृष्ट चिंतन का समावेश हो सकेगा। यदि नहीं तो क्या वे मात्र चलते-फिरते खिलौने भर नहीं रह जाएँगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य तत्त्व वस्तुतः भावनात्मक स्तर पर खड़ा है। उसकी गरिमा को नापना देखना हो तो गहराई में उतरकर देखना होगा कि किसका चिंतन और दृष्टिकोण क्या है, उसकी आस्था, निष्ठा और आकांक्षा किस केंद्र बिंदु पर टिकी है। उच्चस्तरीय दृष्टिकोण के आधार पर ही मनुष्य की महानता निर्भर है। फिर भले ही उसे अभावग्रस्त साधनों से ही जीवनयापन क्यों न करना पड़ रहा हो ?

श्रद्धा ही व्यक्ति को वह संबल प्रदान करती है कि वह अपने आदर्शों के लिए बड़े से बड़े कष्ट सहकर भी प्रसन्न ही रहा आता है, जिसकी आकाँक्षा और आस्था का केंद्र जितना उच्च होगा, उसकी श्रद्धा उतनी ही प्रगाढ़, परिष्कृत समझनी चाहिए।

ईश्वर के प्रति या धर्म के प्रति श्रद्धा की भी प्रगाढ़ता का परिचय इसी से मिलता है कि ईश्वर या धर्म से श्रद्धालु की आकांक्षा का स्तर एवं स्वरूप क्या है ? सच्ची और गहनतम श्रद्धा तो वह है, जिसमें ईश्वर से कोई भी अपेक्षा नहीं की जाती, ईश्वर, की ही अपेक्षा के अनुसार स्वयं को ढाला जाता है।

ईश्वर-श्रद्धा का सच्चा स्वरूप ईश्वर की आकांक्षा में स्वयं को घुला मिला लेना है। यही श्रद्धा की सही परिणति और आस्तिकता की कसौटी है।

यदि आप सचमुच आस्तिक हैं, तो परमेश्वर को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए विवश न करें। वरन् उसकी इच्छा पूर्ति के निमित्त स्वयं बनें। अब तक के उपलब्ध अनुदान कम नहीं, उन पर संतोष करना चाहिए और यदि अधिक की अपेक्षा है तो बुद्धि और पुरुषार्थ के मूल्य पर उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए।

इच्छाओं और कल्पनाओं की पूर्ति के लिए भगवान के सम्मुख गिड़गिड़ाना अशोभनीय है। जो मिला है उसी का सदुपयोग कहाँ कर सके जो और अधिक माँगने की हिम्मत करें। कर्मफल भोगने के लिए हमें साहसी और ईमानदार व्यक्ति की तरह तैयार रहना चाहिए। गलती करने में कभी भी जो दुस्साहस दिखाया था, आज उसका एक अंश प्रस्तुत कर्मफल को भोगते समय भी दिखाना चाहिए। विशेषतया तब जबकि कर्मफल अनिवार्य है। उस विधान से कोई छूट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं सकता। स्वयं भगवान तक न छूट सके तो हम ही क्यों साहस खोकर दीनता प्रकट करें। जो सहना ही ठहरा—उसे हँसते हुए बहादुरी के साथ क्यों न सहें ?

कर्मफल के छुटकारे के लिए, पात्रता से अधिक उपलब्धियों के लिए प्रायः लोग ईश्वर का दरवाजा खटखटाते हैं और पूजा-परिचर्या की व्यवस्था बनाते हैं। यह भक्ति नहीं है, न इसमें श्रद्धा का पुट है। ऐसी ओछी दृष्टि से की गई उपासना से आत्म कल्याण का पथ-प्रशस्त नहीं होता और न वह परमेश्वर को ही प्रभावित करती है।

ईश्वर को अपना आज्ञानुवर्ती बनाने की अपेक्षा यह उचित है कि हम ईश्वर के आज्ञानुवर्ती बनें। ईश्वर को अपनी इच्छानुसार चलाने और अपनी नियम-व्यवस्था बिगाड़ देने के लिए कहने की अपेक्षा यह उचित है कि हम ईश्वर की इच्छानुसार चलें और अपनी वासना, तृष्णाओं का ताना-बाना समेट लें। ईश्वर को अपना अनुचर बनाने की अपेक्षा यही उचित है कि हम उसके अनुचर बनें। मालिक की तरह ईश्वर पर हुक्म चलाना उचित नहीं। उपयुक्त यही है कि हम उसके आदेशों को समझें और तदनुरूप अपनी गतिविधियों का पुनःनिर्माण-पुनर्निर्धारण करें।

आस्तिकता का अर्थ केवल ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करना ही नहीं वरन् यह भी है कि उसके निर्देशों का पालन यथावत किया जाए। उपासना का अर्थ समृद्धि और सुविधा के लिए गिड़गिड़ाना नहीं वरन् यह है कि हमारा यह शौर्य सजग हो जिसमें अंधकार में भटकते लोगों का अनुकरण छोड़कर ईश्वर के पीछे एकाकी चल सकें।

अच्छा हो हम ईश्वर के लिए जिएँ—उसके बनकर रहें और उसकी प्रेरणाओं का अनुकरण करें। उपासना का अर्थ है—पास बैठना। पास बैठें और बिठाएँ। जीवन के उद्देश्य और सदुपयोग का मार्ग पूछें और उस पर चलने की अपनी तत्परता बनाएँ। बैठने की दूरी क्रमशः घटनी चाहिए और निकटता इतनी बढ़ानी चाहिए कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना आपा—परमेश्वर में तल्लीन हो जाए और उस परमज्योति से अपना कण-कण जगमगाने लगे।

अपनी आकांक्षाओं में ईश्वरीय आकांक्षा घुली रहे। हम वही चाहना करें, वही सोचें जो ईश्वरीय प्रेरणा प्रवाह के अनुकूल हो। हम वही करें जो ईश्वर को अपेक्षित है। मन का शासन अस्वीकार करके—ईश्वर के हाथों अपने को सौंप दें और उसी के संकेतों पर अपने चिंतन और कर्तृत्व की शिक्षा का निर्धारण करें।

अपने लिए नहीं हम ईश्वर के लिए जिएँ। यह घाटे का नहीं सबसे अधिक लाभ का कदम है। यह निश्चित है कि जो ईश्वर का होकर रहता है ईश्वर भी उसी का हो जाता है।

परमात्मा तो हमें अपनी गोदी में लेने के लिए, छाती से लगाने के लिए दोनों भुजाएँ पसारकर खड़ा है। एक भुजा है पीड़ितों, पतितों और पिछड़े हुओं का क्रंदन। दूसरी भुजा है—सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन की पुकार। यह निगाह दिशाओं के अंतराल में गूँजता रहता है। बहरे कान उसे सुन नहीं पाते—जो इन निनादों को सुन सके समझना चाहिए, उसके कानों ने ईश्वर का संदेश सुन लिया।

परमात्मा के पास एक ही सर्वोपरि उपहार था—मानव शरीर। इससे बढ़कर और कोई बड़ी संपदा उसके भंडार में है नहीं। जिस प्राणी को यह उपहार मिला, समझना चाहिए वह कृतकृत्य हो गया। सृष्टि के किसी भी जीवधारी को जो सुविधाएँ हैं, वे मनुष्य को मिली हैं। यह उसी का काम है कि इस विभूति का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करके उच्चस्तर तक आ पहुँचे, जहाँ स्वयं परमात्मा विराजमान है। चेतना के साथ जुड़े हुए बहुमूल्य साधनों का मूल्यांकन न कर पाने और उनके सदुपयोग की व्यवस्था न बना पाने के कारण ही हमें दुःख-दैन्य की कँटीली झाड़ियों में भटकना पड़ता है। जीवन-लक्ष्य को समझना और उसके लिए समुचित प्रयास करना यदि किसी के लिए संभव हो सके तो निश्चित रूप से उसे नर-पशु से आगे बढ़कर नर-देव की दिव्य भूमिका में प्रवेश करने का सुअवसर मिल सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य शरीर का अनुपम उपहार देने के उपरांत परमात्मा अपने अंतिम अनुग्रह का एक और अनुदान देने का इच्छुक है। इसी के लिए वह अपने लाड़लों को पास बुलाना चाहता है, गोदी में लेना चाहता है, छाती से लगाना चाहता है और उस अनुदान को देना चाहता है, जिसे प्राप्त करने के बाद और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता, इसी आमंत्रण के लिए उसने अपनी भुजाएँ पसारी हुई हैं। जो उनमें आबद्ध हो सका वही प्रभु की समीपता और उसकी दुलार भरी मनुहार का अधिकारी बन सका।

पतन और पीड़ा से ग्रसित पिछड़े हुए मनुष्य भले ही अपने अकर्म या अज्ञान का फल भुगत रहे हों, पर वे हमारी द्रष्टि में इसी उद्देश्य से आते हैं कि सहानुभूति और सेवा, भावुकता सहयोग द्वारा उन्हें ऊँचा उठाने, सहारा देने का प्रयास करते हुए अपनी बहुमूल्य आत्मिक चेतना को उभारें। दया, करुणा, उदारता, सेवा जैसी दिव्य संपदाओं में अपने को सुसज्जित करें। इस प्रकार के प्रयासों में जो समय, श्रम, मनोयोग एवं धन खर्च होता है। उसकी तुलना में लाखों गुने मूल्य का आत्मबल और आत्म-संतोष मिलता है। व्यक्तित्व में देवत्व का उदय होता है। प्रयत्नों में हुए खर्च और परिणाम में मिले लाभ को यदि ठीक तरह तोला जा सके तो प्रतीत होगा कि जो खोया गया, उससे लाखों गुना पा लिया।

भगवान की पहली भुजा संसार में व्याप्त अधःपतन के प्रति अधिकाधिक सहृदय होने के आमंत्रण लेकर पसरी हुई है। दूसरी भुजा का आह्वान यह है कि इस विश्व वसुधा को सुंदर समुन्नत बनाने वाली सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में योगदान दिया जाए। कोई व्यक्ति एकाकी सुख-संपदा एकत्रित करके सुखी नहीं बन सकता। कुटुंब, परिवार को सुखी बनाने का प्रयत्न करते हुए मनुष्य अपनी सुखानुभूति जो कई गुना बढ़ाता है। यदि ऐसा न होता तो परिवार-पालन में जो कष्ट उठाना पड़ता है और त्याग करना पड़ता है उसके लिए कोई कदापि तैयार न हुआ होता। इस सुख का जितना अधिक विस्तार करना अभीष्ट हो उतना ही अधिक विस्तृत क्षेत्र में अपनी आत्मीयता को विस्तृत करना पड़ता है। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मविस्तार, सहज ही अधिक लोगों का अधिक सुख किस प्रकार संभव हो यही सोचता है और अपनी क्षमता का बड़ा भाग इसी के लिए नियोजित करता है। कहना न होगा कि सत्प्रवृत्तियों और सद्भावनाओं के अभिवर्धन से ही व्यक्ति और समाज सर्वतोमुखी प्रगति का पथ-प्रशस्त होता है।

ईश्वर को पाने के लिए हमें अपनी ओर से कुछ नहीं करना है। केवल उसकी पसरी हुई भुजाओं में प्रवेश करना है। उसके आह्वान को सुनना और उसके आमंत्रण को स्वीकार करना भर ईश्वर-मिलन का प्रयोजन पूरा करने के लिए पर्याप्त है।

जिसने ईश्वर की भावनात्मक पुकार सुन ली, उसका जीवन धन्य हो गया। उसकी भावनाएँ पीड़ा और पतन के निवारण की व्याकुलता से भर उठती है। वह ईश्वरीय कार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर देता है। वही व्यक्ति भक्त कहलाने का अधिकारी है, जिसने पतितों-पीड़ितों के क्रंदन और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन आह्वान के रूप में फैली भगवान की भुजाओं का आमंत्रण स्वीकार कर लिया। जिसने अपनी भावनाओं को बिखरने नहीं दिया और उनकी उत्कृष्टता की दिशा में केंद्रित कर दिया वही भक्त है, उसी की भक्ति में शक्ति होती है।

भावनाएँ भक्ति मार्ग में नियोजित की जाएँ—

भावनाओं की शक्ति भाप की तरह है यदि उसका सदुपयोग कर लिया जाए तो विशालकाय इंजन चल सकते हैं पर यदि उसे ऐसे ही खुला छोड़ दिया जाए तो वह बर्बाद ही होगी किसी के काम आ सकेगी।

भावनाओं में भक्ति का स्थान बहुत ऊँचा है। उसका सहारा लेकर मनुष्य नर से नारायण बन सकता है किंतु यदि उसे एक कल्पना आवेश मात्र मन बहलाव रहने दिया जाए तो उससे किसी का कुछ प्रयोजन सिद्ध न होगा।

रविशंकर महाराज ने आज के भक्तों को तीन रोगों से ग्रसित गिनाया है—(१) गाना (२) रोना (३) दिखावा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भजन कीर्तन के नाम पर दिन-रात झाँझ बजती और हल्ला होता है। गाना वही सार्थक है जो विवेकपूर्वक गाया जाए जिसमें प्रेरणा हो और उसे हृदयंगम करने का लक्ष्य सामने रखा गया हो। जहाँ केवल कोलाहल ही उद्देश्य हो, वहाँ भक्ति का प्रकाश कैसे उत्पन्न होगा ?

रोना अर्थात् संसार को शोक-संताप से भरा भव सागर मानना। इस दुनियाँ से छुटकारा पाकर—किसी अन्य लोक में जा बसने की कल्पना, अपने आपसे भागने के बराबर है। भगवान के सुरम्य उद्यान का सौंदर्य निहारकर आनंद विभोर होने की भक्ति भावना यदि विश्व के कण-कण में संव्याप्त भगवान को देखने की अपेक्षा सर्वत्र दुःख और पाप ही देखें तो इसे बुद्धि-विपर्यय ही कहा जाएगा; भक्तिभाव नहीं। पलायन नहीं भक्ति का तात्पर्य दुःखों का निराकरण एवं दुखियों की सहायता करना है। जहाँ केवल घृणा का विषाद छाया रहे, वहाँ भक्ति की आत्मा जीवित कैसे रहेगी ? अपने को आर्त और दुःखी के रूप में प्रस्तुत करने वाला इस कुरूप चित्रण से अपने सृष्टा को ही अपमानित करता है।

भक्ति का तीसरा छंद है—दिखावा। इन दिनों धार्मिक आडंबर पहाड़ जितना बढ़ चला है पर उसकी मर्म-संवेदनाएँ हृदयंगम कर सकने वाले लोग कितने हैं ?

धर्म का आडंबर इतना अधिक बढ़ता चला जा रहा है कि कई बार तो यह भ्रम होने लगता है कि हम धर्मयुग में रह रहे हैं। कथा, कीर्तन, प्रवचन, सत्संग, पारायण, लीला, सम्मेलन आदि के माध्यम से जगह-जगह विशालकाय आयोजन होते हैं और उनमें एकत्रित विशाल भीड़ को देखने से प्रतीत होता है कि धर्म रुचि आकाश छूने जा रही है, पर जब गहराई में उतरकर देखते हैं तो लगता है कि यह धर्म दिखावा बहुत-से लोग अपना आंतरिक अधार्मिकता को झुठलाकर आत्म प्रवंचना करने के लिए अथवा लोगों की दृष्टि में धार्मिक बनने के लिए खड़ा करते हैं। यह आवरण इसलिए खड़े किए जाते हैं ताकि उनकी यथार्थता पर पर्दा पड़ा रहे और लोग उन्हें उस ऊँचे स्तर का समझते रहें जिस पर कि वे वस्तुतः नहीं हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ लोग वस्तुतः इन आयोजनों को सद्भावना के साथ सदुद्देश्य के लिए भी करते हैं पर वे यह भूल जाते हैं कि धर्म आवरण का आरंभिक प्रयोग भक्ति-भावना जागृत करन के लिए ही हो सकता है, उसका वास्तविक लाभ तो तभी मिलेगा जब आस्थाओं और क्रिया-कलापों में उच्चस्तरीय परिवर्तन संभव हो। इस कार्य के लिए उपयुक्त पथ प्रदर्शक वे हो सकते हैं जिन्होंने अपने को मन, वचन, कर्म से सच्चा भक्त बनने में सफलता प्राप्त की हो और इस श्रेय पथ में प्रगति का प्रकाश वे ही पा सकते हैं, जिन्होंने आवरण से आगे बढ़कर अपने आपको सुधारने सम्हालने के लिए उत्कट प्रयास किया हो।

भावनाओं की शक्ति को भक्ति मार्ग में नियोजित किया जा सके तो मनुष्य इतनी प्रगति कर सकता है, जिससे उसकी अपूर्णता, चरम पूर्णता में परिणत हो सके।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रद्धा-संवर्धन में समर्थ ब्रह्मविद्या

सांसारिक सुखों की उपलब्धि के लिए शरीर-बल आवश्यक है। धन हो तो प्रत्येक मनोवांछित वस्तु सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। जन-शक्ति के आधार पर अयोग्य व्यक्ति तक सत्तारूढ़ हुए हैं। चातुर्य, पद, सत्ता आदि से कोई भी व्यक्ति मनचाही इच्छाएँ पूरी कर सकता है, किंतु ज्ञान के अभाव में यह सारी शक्तियाँ लघु प्रतीत होती। ज्ञान संसार का सर्वोत्तम बल है। इसी के आधार पर दूसरी सफलताएँ प्राप्त की जा सकती हैं। अज्ञानवश मनुष्य तन-धन-जन सभी का नाश कर लेता है। दुष्कर्म में लगे व्यक्ति का कहाँ तो शरीर ठीक रहेगा, कितने दिन धन ठहरेगा और कब तक दूसरों का सहयोग-सहानुभूति व आत्मीयता मिलेगी ? मनुष्य ज्ञान के अभाव में ही बुरे कर्मों की ओर प्रेरित होता है। इसलिए संसार में ज्ञान को ही सर्वश्रेष्ठ बल कहा गया है।

बुद्धिमान व्यक्ति कम से कम साधनों में भी सुखी दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि अज्ञानता के दुष्परिणामों से बचे रहते हैं। उनके प्रत्येक कार्य में विवेक होता है, जो कुछ करते हैं उसे पहिले भली प्रकार सोच-समझ लेते हैं। पूरी तरह विचार करने के बाद किए गए कार्यों से हानि की संभावना प्रायः समाप्त हो जाती है और उस कार्य में पड़ने वाली बाधाओं, परेशानियों ओर मुसीबतों से बचने का रास्ता मिल जाता है। ज्ञान मनुष्य को जीवन का सही रास्ता प्रदर्शित करता है, जिससे उसे कठिनाइयाँ कम होती और सफलताएँ अधिक मिलती हैं। कदाचित् परिस्थितिवश कोई विघ्न आ भी जाए तो अपनी दूरदर्शिता के कारण बुद्धिमान व्यक्ति उसे आसानी से हल कर लेते हैं।

ओछे कर्म करने वाले लोगों का अध्ययन करें तो पता चलता है कि ऐसे कार्य वे अधिकांश अज्ञानतावश ही करते हैं। जीवन की सही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिशा निर्माण करने की क्षमता न तो धन में है, न पद और प्रतिष्ठा में। आत्म-निर्माण की प्रक्रिया सत्कर्मों से पूरी होती है। सन्मार्ग में भी कोई स्वतः प्रवृत्त होता हो यह भी नहीं कहा जा सकता। यह प्रेरणा हमें ओरों से मिलती है। दूसरों की अच्छाइयों का अनुकरण करते हुए भी महानता की मंजिल तक पहुँचने का नियम बना हुआ है। ऐसी बुद्धि किसी को मिल जाए तो उसे यही समझना चाहिए कि परमात्मा की उस पर बड़ी कृपा है। ज्ञान से मनुष्य की ऐसी ही धर्म बुद्धि जागृत होती है। इसलिए ज्ञान को परमात्मा का सर्वोत्तम वरदान मानना पड़ता है।

अज्ञानता के दुष्परिणाम से बचने का यह तरीका सबसे अच्छा है कि हम अपनी मानसिक चेष्टाओं को संसार का रहस्य समझने में लगाएँ। विचार करने की शक्ति हमें इसीलिए मिली है कि हम सृष्टि की वस्तु स्थिति को समझें और इसका लाभ अपने सजातियों को भी दें, किंतु यह सब कुछ तभी संभव है, जब हमारा ज्ञान बढ़े। जब-तक हम ज्ञानवान् नहीं बनते, अज्ञानता का शैतान हमारे पीछे पड़ा रहेगा, ऐसी अवस्था में हमारी मोह-ग्रंथियाँ ज्यों की त्यों बँधी रहेंगी। अज्ञानता का अंधकार और विश्व-रहस्य की जानकारी के लिए ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। इसी से भव-बंधन टूटते हैं।

व्यक्ति के पात्रत्व की सच्ची कसौटी उसके ज्ञान से होती है। समाज में अधिक देर तक सम्मान व प्रतिष्ठा उन्हीं को मिलती है जो शीलवान, शिष्ट व विनम्र होते हैं। उद्दंड दुराचारी व अशिष्ट व्यक्तियों को सभी जगह तिरस्कार ही मिलता है। इन आध्यात्मिक सद्गुणों का आंतरिक प्रतिष्ठान ज्ञान से होता है, इससे सदाचार में रुचि बढ़ती है। आप्त वचन है "विद्या ददाति विनयम्, विनयम् ददाति पात्रताम्" अर्थात् विद्या से, ज्ञान से विनयशीलता आती है। विनयशील ही पात्रत्व के सच्चे अधिकारी होते हैं।

मानवीय प्रतिभा का विकास ज्ञान से होता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन सभी के महान् व्यक्तित्व का विकास ज्ञान से हुआ है। भगवान् राम, कृष्ण, गौतमबुद्ध, ईसामसीह, सुकरात आदि सभी महापुरुषों ने ज्ञान की श्रेष्ठता को स्वीकार किया है। सांसारिक दुःखों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परित्राण-पाने के लिए मानव जाति को सदैव ही इसकी आवश्यकता हुई है। शास्त्रकार ने ज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करते हुए लिखा है—

मोक्षस्य न हि वासेऽस्ति न ग्रामान्तर मेव वा।
अज्ञान हृदयग्रन्थिर्नाशो मोक्ष इति स्मृत।।

(शिव-गीता)

अर्थात् मोक्ष किसी स्थान विशेष में उपलब्ध नहीं होता। इसे पाने के लिए गाँव-गाँव भटकने की भी आवश्यकता नहीं। हृदय की अज्ञान ग्रंथि का नष्ट हो जाना ही मोक्ष है। दूसरे शब्दों में स्वर्ग, मुक्ति का साधन है—ज्ञान। इसे पा लिया तो इसी जीवन में जीवन-मुक्ति मिल गई समझनी चाहिए।

इस युग में विज्ञान की शाखा-प्रशाखाएँ सर्वत्र फैली हैं। प्रकाश, ताप, स्वर, विद्युत चुंबकत्व और पदार्थों की जितनी वैज्ञानिक शोध इस युग में हुई है, उसी को ज्ञान मानने की आज परंपरा चल पड़ी है। इसी के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन भी हो रहा है। तथाकथित विज्ञान को ही ज्ञान मान लेने की भूल सभी कर रहे हैं किंतु यह जान लेना नितांत आवश्यक है कि ज्ञान, बुद्धि की उस सूक्ष्म क्रियाशीलता का नाम है, जो मनुष्य को सन्मार्ग की दिशा में प्रेरित करती है। विज्ञान का फल है इहलौकिक कामना पूर्ति और ज्ञान का संबंध है अंतर्जगत से। ज्ञान वह है जो मनुष्य को आत्म-दर्शन में लगाए।

इसके लिए प्रमाद को त्यागकर विनम्र बनना पड़ता है। जो केवल अपनी ही अहंता प्रतिपादित करते रहते हैं, जिन्हें केवल अहंकार प्यारा है, वे अपने संकुचित दृष्टिकोण के कारण ज्ञान के आनंद और अनुभूति को जान नहीं पाते। छोटे से छोटा बन जाने पर ही महानता की पहचान की जा सकती है। गल्ले के भारी ढेर पसेरियों से तौले जाते हैं। कपड़ों के थान गजों से नापते हैं। अमुक स्थान कितनी दूर है, यह मील के पत्थर बताते हैं। ऐसे ही विराट के साथ संबंध स्थापित करने के लिए महानता से गठबंधन करने के लिए—हमें विनम्र बनना पड़ता है। भय लज्जा और संकोच को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्यागकर तत्परतापूर्वक अपनी चेष्टाओं को उस ओर मोड़ना पड़ता है। तब कहीं ज्ञानवान् बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

अपने पास धन हो तो संसार की अनेकों वस्तुएँ क्रय की जा सकती है। शारीरिक शक्ति हो तो दूसरों पर रौब जमाया जा सकता है। इससे दूसरों पर शासन भी कर सकते हैं औरों के अधिकारों का अपहरण भी कोई बलशाली कर सकता है। किंतु विद्या किसी से खरीदी नहीं जा सकती दूसरों से छीन भी नहीं सकते। इसके लिये एकांत में रहकर निरंतर शोध, अध्ययन और पर्यवेक्षण की आवश्यकता पड़ती है। अपनी मानसिक चेष्टाओं को सरस व मनोरंजक कार्यक्रमों से मोड़कर इसमें लगाना पड़ता है। ज्ञानार्जन एक महान् तप है। इसे प्राप्त करने के लिए दृढ़ता, मनस्विता और अध्ययनशीलता अपेक्षित है, इसे प्राप्त कर लेने के बाद खो जाने का भय नहीं रहता।

किन्हीं बालकों में किशोरावस्था में ही अलौकिक बौद्धिक क्षमता या प्रतिभा देखते हैं तो यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि एक ही वय, स्थान व वातावरण में अनुकूल स्थिति प्राप्त होने पर भी दो बालकों की मानसिक शक्ति में यह अंतर क्यों होता है ? तब यह मानना पड़ता है कि एक में पूर्व जन्मों के ज्ञान के संस्कार प्रबल होते हैं दूसरे में क्षीण। भरत, ध्रुव, प्रहलाद, अभिमन्यु आदि में जन्म से ही प्रखर ज्ञान के उज्ज्वल संस्कार पड़े थे। जगद्गुरु शंकराचार्य ने थोड़ी ही अवस्था में पूर्णता प्राप्त कर ली थी। यह उनके पिछले जन्मों के परिपक्वज्ञान के कारण ही हुआ मानना पड़ता है। इससे इस मत की पुष्टि होती है कि चिर-सहयोगी के रूप में जन्म जन्मांतरों तक साथ रहने वाला अपना ज्ञान ही है। ज्ञान का नाश-नहीं होता। वह अजर है अमर है।

सार्थक-जीवन की आधारशिला ज्ञान है। बुद्धिमत्ता की सच्ची कसौटी यह है कि मनुष्य अपनी सच्ची जीवन दिशा निर्धारित करे। कुछ न कुछ करते रहें चाहे वह अहितकर ही क्यों न हो, यह बात तर्क-संगत प्रतीत नहीं होती। कर्म का महत्त्व तब है जब उससे हमें अपना जीवन-लक्ष्य प्राप्ति करने में सफलता मिलती है। यह प्रक्रिया मानव जीवन में सन्मार्ग पर चलने से पूरी होती है और सन्मार्ग पर देर तक टिके रहना ज्ञान-प्राप्ति से ही संभव है। ज्ञान ही इस संसार की सर्वोपरि संपत्ति है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मिक प्रगति के लिए-उत्कृष्ट शिक्षा की आवश्यकता—

हमारे जीवन-यापन की क्रियाओं में पाप का पुट प्रवेश न करने पावे। इस सावधानी के लिए ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता है। ज्ञान से दृष्टिकोण परिमार्जित होता है, विचार-शक्ति बढ़ती है और युक्तायुक्त निर्णय की क्षमता प्राप्त होती है। क्या पाप है, क्या पाप नहीं है, इसका ज्ञान जीवन एवं कर्मदर्शन संबंधी पुस्तकों से ही प्राप्त हो सकता है और वे सद्ग्रंथ हैं, वेद-शास्त्र गीता, उपनिषद्, रामायण आदि आध्यात्मिक एवं धार्मिक पुस्तकें इन आर्ष ग्रंथों के अतिरिक्त लौकिक विद्वानों द्वारा लिखा हुआ एक से एक बढ़कर नैतिक साहित्य भरा पड़ा है—योग्यता तथा युग के अनुसार उसका लाभ भी उठाया जा सकता है।

ज्ञान-गुण प्राप्त करने के लिए जिस वस्तु की प्रथम एवं प्रमुख आवश्यकता है, वह है—शिक्षा। शिक्षा ज्ञान की आधार भूमि है। जो अशिक्षित है, पढ़ा-लिखा नहीं है, वह किसी भी जीवन अथवा कर्म-दर्शन संबंधी पुस्तक का अध्ययन किस प्रकार कर सकता है ? किस प्रकार उनकी शिक्षाओं को समझ सकता है और किस प्रकार हृदयंगम कर सकता है ? उसके लिये तो ज्ञान से भरी पुस्तकें भी रद्दी कागज से अधिक कोई मूल्य न रखेंगी।

अनेक लोग कबीर दादू, नानक, तुकाराम, रैदास, नरसी यहाँ तक कि सुकरात, मुहम्मद और ईसा महात्माओं एवं महापुरुषों का उदाहरण देकर कह सकते हैं कि यह लोग शिक्षित न होने पर भी पूर्ण ज्ञानवान् तथा आध्यात्मिक सत्पुरुष थे। इनका संपूर्ण जीवन आजीवन निष्पाप रहा और निश्चय ही इन्होंने आत्मा को बंधन मुक्त कर मोक्ष पद पाया है। इससे सिद्ध होता है कि निष्पाप जीवन की सिद्धि के लिए शिक्षा अनिवार्य नहीं है। ऐसा कहने वाले यह भूल जाते हैं कि अनायास ज्ञान प्राप्त कर लेने वाले महापुरुष अपने पूर्वजन्म के संस्कार साथ लेकर आते हैं।

एक ही शरीर में जीवन की इतिश्री नहीं हो जाती। इसका क्रम जन्म-जन्मांतरों तक चला करता है और तब तक चलता रहता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब तक जीवात्मा पूर्ण निष्पाप होकर मुक्त नहीं हो जाती। अनायास ज्ञानज्ञों का उदाहरण देने वालों को विश्वास रखना चाहिए कि उक्त महात्माओं ने अपने पूर्वजन्मों में ज्ञान पाने के लिए अनथक पुरुषार्थ किया होता है। उसके इतने अनुपम एवं उर्वर बीज बोए होते हैं, अपने मन, मस्तिष्क एवं आत्मा को इतना उज्ज्वल बनाया होता है कि किसी समय भी पुनर्जीवन में आँख खोलते ही उनका संस्कार रूप में साथ आया हुआ ज्ञान खुल-खिलकर उनके आदर्श-व्यक्तित्व में प्रतिविंबत एवं मुखरित हो उठता है। ज्ञान प्राप्ति का प्रारंभिक चरण शिक्षा ही है। शिक्षा के अभाव में कोई भी व्यक्ति ज्ञानवान् नहीं बन सकता।

जीवन पद्धति को आध्यात्मिक मोड़ दिए बिना आत्मा के विकास की संभावनाएँ उज्ज्वल नहीं हो सकती। जीवन में आध्यात्मिक गुणों का, उदारता, त्याग, सदिच्छा, सहानुभूति, न्याय-परता, दयाशीलता आदि को जाग्रत करने का काम शिक्षा द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। शिक्षा मनुष्य को ज्ञानवान् ही नहीं, शीलवान् बनाकर निरामय मानवता के अलंकरणों द्वारा उसके चरित्र का श्रृंगार कर देती है। शिक्षा संपन्न व्यक्ति ही वह विवेक शिल्प सिद्ध कर सकता है, जिसके द्वारा गुण, कर्म एवं स्वभाव को वांछित रूप में गढ़ सकना संभव हो सकता है। अशिक्षित व्यक्ति का संपूर्ण जीवन क्या बाह्य और क्या आंतरिक विकारों एवं विकृतियों से भरा हुआ ऊबड़-खाबड़ बना रहता है। अशिक्षित व्यक्ति न तो जीवन की साज-सँभाल कर सकता है और न उसका उद्देश्य ही समझ सकता है।

अशिक्षित व्यक्ति जब सामान्य जीवन की साधारण परिस्थितियों तक का निर्वाह सफलता एवं कुशलतापूर्वक नहीं कर सकता जब वह आत्मोद्धार के प्रवीणतापूर्ण प्रयत्नों को किस प्रकार कार्यान्वित कर सकता है ? कर्म कुशल वह आध्यात्मिक कर्म-कुशलता है, जो केवल शिक्षा के बल पर ही खोजी, पाई और प्रयोग की जा सकती है। जो अशिक्षित व्यक्ति एक पत्र पढ़वाने के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। जो यह नहीं समझ पाता कि जिस कागज पर उसने अँगूठा छापा है, उसमें क्या लिखा है जिस मनीआर्डर को वह प्राप्त कर रहा है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसमें कितने रुपये लिखे हैं ? वह भला आत्मिक विकास के सूक्ष्म उपायों को क्या जान सकता है ? उसके लिए आत्मा, परमात्मा, प्रकृति पुरुष, मोक्ष मुक्ति, कर्म, अकर्म, पाप-पुण्य आदि की परिभाषाएँ ऐसी अनबूझ ही रहती हैं जैसे किसी बालक के लिए पक्षियों का कलरव। वह केवल इतना ही अनुभव कर सकता है, यदि कर सके—यह कुछ है तो अच्छा किंतु यह नहीं समझ सकता कि इन सबका अर्थ और उद्देश्य क्या है ?

पशु क्या है ? एक प्राणी और मनुष्य—वह भी एक प्राणी है। एक चतुष्पद और दूसरा द्विपद। दोनों खाते-खेलते और एक से अनेकता संपादित करते हैं। दोनों भूख-प्यास अनुभव करते हैं और दोनों नींद से निमीलित होते हैं। दोनों स्वार्थ के लिए लड़ते-झगड़ते और दोनों ही समान रूप से अपने सामान्य हित-अनहित को जानते हैं। जैसे अन्य पशु-पक्षियों को दुःख-सुख की अनुभूति होती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी। जीवों के असंख्यों आकार-प्रकारों में से एक मनुष्याकार भी है। हाथ-पैर, नाक-कान, पेट-पीठ संबंधी कायिक कौतूहल पशु और मनुष्य प्राणी के बीच किसी मूल एवं महत्त्वपूर्ण भेद की प्रवक्ता नहीं है।

संसार के अन्य प्राणियों से भिन्न मानव-प्रणाली मनुष्य की यथार्थक संज्ञा का अधिकारी तब ही बनता है, जब वह प्रकृत प्रेरणाओं एवं प्रवृत्तियों का परिष्कार कर आध्यात्मिक आलोक में उनका प्रयोग कर सकने की योग्यता विकसित कर लेता है। अन्यथा, अन्य प्राणियों और मानव प्राणी में कोई अंतर नहीं है। जिस प्रकार जीव जगत् में किसी को गाय, बैल, घोड़ा, गधा, हाथी, हिरन आदि अभिधानों से संबोधित किया जाता है, उसी प्रकार इस द्विपदगामी मनुष्य को भी नर-पशु नाम से पुकारा जाता है।

अन्य जीव-जंतुओं तथा मनुष्य के बीच जो मूल एवं महत्त्वपूर्ण अंतर है, वह यह कि मनुष्य 'आत्म-जीवी' है, जबकि अन्य जीव 'शरीर जीवी' होते हैं। उनकी सारी इच्छाएँ, अभिलाषाएँ एवं आवश्यकताएँ केवल शरीर तक ही सीमित रहती हैं, जबकि मनुष्य की अभिलाषाएँ आध्यात्मिक और आवश्यकताएँ आत्मिक स्तर तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा पहुँची हैं। वह विवेक-बुद्धि अन्य प्राणियों में नहीं होती, जिसके प्रसाद से मनुष्य ने आत्मा को जाना-पहचाना और उसके उद्धार के लिए प्रयत्न पथ का प्रस्तुतन किया।

आत्मा की परिचायक इस विवेक, बुद्धि का विकास जड़तापूर्ण स्थिति में नहीं हो सकता। इसके लिए मनुष्य को साक्षर ही नहीं, शिक्षित होना होगा। अशिक्षा का अभिशाप पाप की प्रेरणा देकर मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही नष्ट कर देता है। कर्म-अकर्म का ज्ञान न होने से अशिक्षित व्यक्ति की अधिकांश क्रियाएँ अंधकार की ओर ही ले जाने वाली सिद्ध होती है। जड़ता जन्य प्रेरणाओं में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के विकार तथा ईर्ष्या-द्वेष स्वार्थ, अदय एवं अनधिकारिता का विष व्याप्त रहता है, जिससे मनुष्य की आत्मा प्रबुद्ध होने के स्थान पर अधिकाधिक निश्चेष्ट होती जाती है। अंधकार में चलने वाला व्यक्ति जिस प्रकार कदम-कदम पर ठोकर खाता चलता है, उसी प्रकार अंतर में 'अज्ञान' का अंधकार लेकर चलने वाला अशिक्षित व्यक्ति संसार पथ पर अविराम गति से नहीं चल सकता। प्रतिपल, पतन का भय उसे कभी भी आत्मोद्धार की दिशा में बढ़ने देगा, ऐसी आशा कर सकना संभव नहीं।

जो अशिक्षित हैं, अज्ञानी हैं और इस अभिशाप को मिटा डालने में रुचि नहीं रखता उसे उस आत्मा का अमित्र ही कहा जाएगा, जो परमात्मा का पावन अंश है और शरीर साधन को सक्रिय रखने के लिए चेतना रूप से मनुष्य में इस उद्देश्य से स्थापित की गई है कि वह उसे जाने और उसके माध्यम से विश्व-ब्रह्मांड के कारण भूत परमात्मा को पहचानकर मुक्ति पद का अधिकारी बने।

जो आत्मा की जिज्ञासा नहीं करता और उसे मुक्त करने के प्रयत्नों की ओर से विमुख है, वह जन्म-जन्मांतरों तक इस प्रकार ही दुःख भोगता रहेगा, जिस प्रकार वर्तमान में भोग रहा है। ज्ञान के अतिरिक्त इस भ्रामक भव रोग की अन्य औषधि नहीं, जिसकी प्राप्ति विद्या बल पर ही की जा सकती है।

लोक की सफलता और परलोक की संराधना के लिए शिक्षितों को ज्ञान और अशिक्षितों को शिक्षा की ओर अग्रसर होना ही चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितिवश जिन्हें शिक्षा का अवसर न हो, वे जिस प्रकार भी हो सके साक्षरता के अक्षत तो डाल ही लें। इससे उनके सूक्ष्म अंतःकरण में विद्या के बीज पड़ जाएँगे, जो कि संस्कार रूप में उनके साथ जाकर पुनः अथवा पुनरपि जन्म में पुष्पित एवं पल्लवित होकर ही रहेंगे।

शिक्षण का दूसरा क्षेत्र है—आत्म-ज्ञान, धर्म, अध्यात्म। इसे विद्या के नाम से संबोधित किया जाता रहा है। शिक्षा और विद्या में मौलिक अंतर है। शिक्षा उसे कहते हैं जो जीवन के बाह्य प्रयोजनों को पूर्ण करने में सुयोग्य मार्ग दर्शन करती है। साहित्य, शिल्प, कला, विज्ञान, उद्योग, स्वास्थ्य, समाज आदि विषय इसी शिक्षा परिधि में आते हैं। विद्या का क्षेत्र इससे आगे का है—आत्मबोध, आत्म निर्माण, कर्त्तव्य निष्ठा, सदाचरण, समाज निष्ठा आदि वे सभी विषय विद्या कहे जाते हैं, जो वैयक्तिक चिंतन, दृष्टिकोण एवं सम्मान में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता का समावेश करते हों। स्वार्थ परता को घटाते और लोक निष्ठा को बढ़ाते हों। धर्म और अध्यात्म का सारा ढाँचा मात्र इसी प्रयोजन के लिए तत्त्वदर्शियों ने खड़ा किया है।

ईश्वर भक्ति, उपासना, योग-साधना, धर्मानुष्ठान, कथा-कीर्तन, स्वाध्याय सत्संग, दान, पुण्य आदि का जो जितना कुछ भी धर्म कलेवर खड़ा है; इस सबके पीछे एक ही उद्देश्य है मनुष्य व्यक्तिवादी पशु-प्रवृत्तियों से छुटकारा पाए और समाज निष्ठा के परमार्थ मार्ग को अपनाकर उदार एवं लोक सेवी प्रक्रिया अपनाए। इस मूल प्रयोजन की ओर मनुष्य को अग्रगामी बनाने के लिए अनेक कथा पुराण बनाए गए, धर्मशास्त्र रचे गए, साधन विधान बनाए गए, स्वर्ग-नरक के भय प्रलोभन प्रस्तुत किए गए। अदृश्य जगत के लोक-लोकांतरों के देव-दानवों के प्रतिपादन किए गए। मत-मतांतरों के बीच इन प्रतिपादनों में भारी अंतर पाया जाता है, पर मूल प्रयोजन सबका एक है-मनुष्य की पशु प्रवृत्ति को, व्यक्तिवादी स्वार्थपरता को समाज निष्ठ परमार्थ को धर्म धारणा में विकसित करना।

इसे एक दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि शिक्षा क्षेत्र की तरह विद्या क्षेत्र में भी रूढ़िवादिता का साम्राज्य है। धर्म पुरोहित अब केवल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवरण की प्रतिष्ठा कर रहे हैं और मूल उद्देश्य को भुला रहे हैं। अमुक धर्मानुष्ठान का कर्मकांड पूरा कर देने से, कथा-कीर्तन के श्रवण, नदी सरोवर के स्नान, तीर्थ, मंदिर दर्शन, जप-तप मात्र को स्वर्ग मुक्ति का आधार घोषित कर दिया गया है। आंतरिक दृष्टि से मनुष्य घोर व्यक्तिवादी, समाज विरोधी रहकर भी इस धर्माचरण की सहायता से सद्गति प्राप्त कर सकता है, ईश्वर का कृपापात्र बन सकता है। आज इसी प्रतिपादित की धूम है। इसे ज्ञान के नाम पर अज्ञान का प्रसार ही कहना चाहिए। प्राणरहित लाश की तरह धर्म का आवरण भर खड़ा रखा जा रहा है और यह भुलाया जा रहा है कि यह विशाल आवरण आखिर खड़ा किसलिये किया गया था ?

आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के साथ-साथ विद्या के क्षेत्र में भी क्रांति उपस्थित की जाए। ढर्रे की शिक्षा भार भूत है। भौतिक जीवन की गुत्थियों को सुलझाने की क्षमता जो शिक्षा हमें प्रदान न कर सके उसे उपयोगी कैसे कहा जा सकता है ? इसी प्रकार जो विद्या मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता एवं आदर्शवाद का समावेश न करे—व्यक्तिवादी स्वार्थपरता से विरत कर समूहवादी परमार्थ में संलग्न न करे—उसे भी भारभूत ही कहना चाहिए। इस निष्प्राण धर्म-कलेवर से केवल धर्म व्यवसायियों का लाभ हो सकता है। जन साधारण को तो उलटे अज्ञान में भटकते हुए अपने धन और समय की बर्बादी का घाटा ही उठाना पड़ेगा। विद्या क्षेत्र की इस विडंबना का भी अब अंत ही किया जाना चाहिए। दिवा-स्वप्नों में भटकने-भटकाने की प्रवृत्ति को आगे नहीं बढ़ने देना चाहिए।

आत्म विद्या का, धर्म धारणा का स्वरूप सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए। कथा पुराण एवं धर्मानुष्ठान भले ही किसी रूप में हों पर उनका लक्ष्य उतने भर से आत्म-लाभ मिल जाने के प्रतिपादन से ऊँचा उठकर यह रहना चाहिए कि विश्व मानव को भगवान मानकर, उसकी स्थिति ऊँची उठाने में योगदान देकर सच्ची भक्ति भावना का परिचय दिया जाए। प्रेरणा युक्त धर्म-कलेवर की उपयोगिता ही मानवीय विवेक को स्वीकार हो सकती है। अनास्था के वातावरण को बदल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर आस्तिकता की ओर जन मानस को तभी मोड़ा जा सकता है जब आत्म विद्या का, धर्म धारणा का स्वरूप रूढ़िवादी न रहकर मनुष्य के आंतरिक उत्कर्ष में सहायक सिद्ध हो सके। चिर अतीत में तत्त्वदर्शियों ने इस समस्त प्रक्रिया का सृजन इसी प्रयोजन के लिए किया था, बहुत भटक लेने के बाद अब हमें बदलना चाहिए और धर्म धारणा को परमार्थ प्रयोजन पर केंद्रित करना चाहिए।

धर्म के आधार पर विकसित होने वाली परमार्थ प्रवृत्ति को लोक मंगल में नियोजित करना आत्म-विद्या का मूलभूत प्रयोजन है। उसे इन दिनों पूरी तत्परता में साथ इसी भूल-सुधार में लगना चाहिए। पिछले दिनों के भटकाव को सुधारना ही इन दिनों धर्म क्षेत्र के लिए सर्वोत्तम प्रायश्चित्य होगा। खोई हुई आस्था और प्रतिष्ठा को वह इसी आधार पर पुनः वापिस लाने में समर्थ होगा।

जिन्हें सचमुच विद्या से प्रेम है उन्हें वर्तमान धर्म शिक्षा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए आगे आना चाहिए। बुद्धि, प्रतिभा, समय, श्रम और धन का जो जितना बड़ा अंश लोक मंगल के लिए नियोजित कर सके। उसे उतना ही बड़ा धर्मात्मा माना जाए। पिछले अंधकार युग की सामाजिक एवं बौद्धिक विकृतियाँ इतनी अधिक अभी भी भरी हुई हैं कि उनकी सफाई में भारी प्रयत्न करने की आवश्यकता है। उत्कृष्ट चिंतन और आदर्शवादी कर्तृत्व को जन साधारण के दृष्टिकोण, स्वभाव एवं अभ्यास में ध्यान दिलाने के लिए घनघोर प्रयास करने होंगे। इसके लिए प्रत्येक धर्म प्रेमी को सामयिक कर्त्तव्य समझकर सर्वतो भावेन संलग्न होना चाहिए। धर्म शिक्षा का, आत्म विद्या का प्रशिक्षण इन दिनों इसी केंद्र पर केंद्रित रहना चाहिए। इसी प्रयास को आत्म-कल्याण स्वर्ग-मुक्ति एवं ईश्वर प्राप्ति की सर्वोत्तम युग साधना बनाया जाना चाहिए। धर्म और ईश्वर के नाम पर खर्च होने वाला प्रत्येक पैसा और समय का प्रत्येक क्षण इसी केंद्र पर केंद्रित किया जाना चाहिए।

वानप्रस्थ परंपरा इसीलिए थी कि अधेड़ होने तक मनुष्य अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो ले और जीवन का उत्तरार्ध लोक मंगल के लिए उत्सर्ग करे। इस परंपरा को पुनर्जीवित करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की आवश्यकता है ताकि सुयोग्य, अवैतनिक, भावनाशील, अनुभवी सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की सेना का उद्‌भव फिर शुरू हो जाए और उसके द्वारा सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रांति की, सर्वतोमुखी नव निर्माण की आवश्यकता को पूरा किया जाना सहज ही संभव हो सके है।

शिक्षा और विद्या में परिवर्तन और सुधार ही मानवीय प्रगति का मूल भूत आधार है। विश्व कल्याण शांति की उभयपक्षीय प्रयोजन शिक्षा और विद्या के परिष्कार पर अवलंबित है। इस तथ्य को जितनी जल्दी समझ लिया जाए उतना ही उत्तम।

शिक्षा हमें विद्योपार्जन के योग्य बनाती है। व्यक्तित्व, विकास का वह प्राथमिक सोपान है। विद्या का उद्देश्य सूक्ष्म जगत में प्रवेश की उसकी अनुभूति—सम्वेदना की सामर्थ्य उत्पन्न करना है। शिक्षा स्थूल जगत के व्यावहारिक क्रियाकलापों की विधि सिखाती है। विद्या सूक्ष्म जगत के भावनात्मक विस्तार का परिचय कराती और आस्थाओं को उत्कृष्ट परिपक्व बनाती है। शिक्षा पदार्थ से संबंधित जानकारी देती है। विद्या चेतना की अनुभूति एवं ज्ञान में समर्थ बनाती है। शिक्षा का क्षेत्र है भौतिक जगत। विद्या का क्षेत्र इस भौतिक जगत से परे का कोई रहस्यमय संसार नहीं, इसी भौतिक जगत के अंतराल में निरंतर क्रियाशील सूक्ष्म जगत है, जो चेतना, भावना एवं आस्था द्वारा ही श्रेय है।

सूक्ष्म जगत के जीवन पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थों में सी. डब्ल्यू. लैड वीटर की 'दि अदर साइड ऑफ डैथ' और श्रीमती ऐनी बेसेंट की 'लाइफ आफ्टर डैथ' अधिक प्रख्यात है। उन्होंने भौतिक जगत के अंतराल में विद्यमान सूक्ष्म लोक के अस्तित्व पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है और कहा है कि उसमें आत्माएँ सूक्ष्म शरीर में उसी प्रकार निवास करती हैं जैसे कि हम लोग स्थूल शरीर से इस प्रत्यक्ष संसार में जीवनयापन करते हैं। मैडम ब्लावटस्की कर्नल आल्काट आदि ने इस संदर्भ में अपनी मान्यताओं का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सात लोकों की तरह आत्मा के भी सात शरीर हैं। स्थूल शरीर को क्रिया लोक कह सकते हैं। सूक्ष्म शरीर को विचार लोक और कारण शरीर को भावना लोक। यह मोटी तीन परतें हैं, पर यदि इनका बारीकी से विश्लेषण किया जाए तो वे तीन न रहकर सात हो जाती हैं विभिन्न नाम हैं। इनमें से प्रत्येक परत अधिक शक्तिशाली और अधिक संवेदनशील है। हम स्थूल से सूक्ष्म की परतों में जितना अधिक प्रवेश करते हैं, उतना ही अधिक गहरी सशक्तता का समुद्र लहलहाता दीखता है।

चेतना के विकास का लक्षण यही है कि ससीम से आगे बढ़कर असीम में प्रवेश करें। चिंतन की दृष्टि से इसे आत्म-विस्तार कह सकते हैं। संकीर्ण स्वार्थ परता की परिधि तोड़कर "आत्मवत् सर्व भूतेषु" की मान्यता बना लेने वालों का आचरण विश्व नागरिक जैसा होता है और वे परमार्थ प्रयोजनों को ही वास्तविक स्वार्थ साधन मानते हैं। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से ओत-प्रोत होकर वे अपना क्रिया-कलाप इस स्तर का बनाते हैं, जिसके आधार पर लोक-मंगल के महान प्रयोजनों में अपनी क्षमता संलग्न रह सके। यह आत्म-विकास या आत्म विस्तार हुआ। अध्यात्मवादी इसी दिशा में प्रयत्नशील रहते और आगे बढ़ते हैं।

बात जानने तक ही सीमित नहीं है। सूक्ष्म प्रकृति पर जितनी मात्रा में आधिपत्य होता जाता है उसी अनुपात से उसकी विचित्र शक्तियों का उपयोग करने का अधिकार भी मिल जाता है। जिस प्रकार स्थूल संपत्ति का लाभ किसी दूसरे को दिया जा सकता है, उसी प्रकार सूक्ष्म जगत विभूतियों से भी अपने प्रिय पात्रों को लाभान्वित किया जा सकता है। यह सामर्थ्य वरदान की शक्ति कहलाती है। इसी प्रकार कुपित स्थिति में अपनी मानसिक चेतना का प्रहार करके किसी की हानि भी की जा सकती है। इसे शाप की शक्ति कहते हैं। अभिशप्त व्यक्तियों अथवा पदार्थों की दुर्गति होने के कितने ही उदाहरण समय-समय पर मिलते रहते हैं।

ब्रह्म चेतना में प्रवेश करके हम उच्चस्तरीय अतिमानवी उत्कृष्ट भाव चिंतन उपलब्ध कर सकते हैं। इस आधार पर मनुष्य को उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रद्धा संवेदनाओं का अनुदान मिलता है, जिन्हें देव स्तर का कहा जाता है। इस अवतरण में व्यक्ति अधिकाधिक पवित्र एवं सुसंस्कृत बनता जाता है। आत्मीयता का विस्तार होने से संकीर्ण स्वार्थपरता झड़ने लगती है और उसके स्थान पर "सबको अपने में और अपने को सबमें" देखने का दृष्टिकोण विकसित होता है। ऐसी स्थिति में दूसरों के दुःखों को बँटा लेने और अपने सुखों को बाँट देने की नीति अपनाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह जाता। दया, करुणा, उदारता जैसी सद्भावनाएँ अंतःकरण में उपजती हैं और सद्भावनाओं का विस्तार होने, लोक-मंगल के प्रति अधिकाधिक रुचि बढ़ने, परमार्थ परायण सेवा सहकारिता चरितार्थ करने में रस लेने की प्रवृत्ति स्वयंमेव बढ़ती चली जाती है। व्यक्तियों में सहृदयता, सज्जनता, आदर्शवादी चरित्रनिष्ठा भरती और बढ़ती चली जाती है।

सत्प्रयोजनों को अपनाने में एकाकी बढ़ चलने का शौर्य साहस विकसित होता है। अनीति अपनाने वाली दुनियाँ का बहुमत एक ओर उसको नीति निष्ठा एकाकी अपने स्थान पर अंगद के पैर की तरह अड़ी रह सकती है। अविवेक का अंधकार उसे प्रभावित नहीं करता। कौन क्या कहता है ? उसे इसकी तनिक भी परवाह नहीं होती। ईमान और भगवान का अनुकूल रहना उसे अपने क्रिया-कलाप को अपनाने में पर्याप्त प्रतीत होता है, अन्य लोग समर्थन करते हैं या विरोध इसकी उसे रत्ती भर भी चिंता नहीं रहती। ब्रह्मपरायण व्यक्ति की आत्म चेतना में उच्चस्तरीय सद्भावनाएँ और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ती और भरती चली जाती हैं। अति मानव में यही विशेषताएँ होती है देवात्माओं में यही गुण पाए जाते हैं।

मनुष्य अन्य प्राणियों से ऊँचा अपनी शरीर रचना अथवा बुद्धिकौशल के कारण नहीं बना है। उसकी प्रगति का मूल कारण सहकारिता-सद्भावना एवं उदार चरित्र निष्ठा जैसी सद्भावनाओं में सन्निहित है। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके लिए परिवार समाज एवं शासन की संरचना करना संभव हुआ। सामूहिक प्रयत्नों का ही फल है कि शिक्षा, चिकित्सा, व्यवस्था उत्पादन व्यवसाय, विज्ञान जैसी उपलब्धियाँ संभव हो सकीं। पारस्परिक आदान-प्रदान की विशेषता ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्वजों के अनुभवों से अगली पीढ़ियों को लाभान्वित किया है। उपार्जन का लाभ सबने मिल-जुल कर उठाया है। स्वार्थपरता, लिप्सा और उच्छृंखलता को नैतिक अनुशासन के सहारे कुचला और उदार सहकारिता को कष्ट सहकर भी स्वीकार किया है। मानवी प्रगति के यही आधार है। ऐसी ही उत्कृष्ट भाव-संवेदनाओं को मानवता कहा जाता है।

शरीर, बल और बुद्धि-कौशल की दृष्टि से अन्य प्राणी भी अपनी-अपनी स्थिति और आवश्यकता के अनुरूप पर्याप्त सामर्थ्य संपन्न हैं। हाथी ह्वेल और सिंह की तुलना में मनुष्य का शरीर बल तुच्छ है। हिंस्र पशुओं की आक्रमण चतुरता और शाकाहारियों की आत्म रक्षण कुशलता के दाँव-पेचों को देखकर लगता है, उस क्षेत्र में उनका बुद्धि-वैभव मनुष्य से पीछे नहीं आगे ही है। ऋतु प्रभवों एवं क्षुधा, पिपासा जैसी शारीरिक आवश्यकताओं को सहन करने की तितीक्षा शक्ति अपेक्षाकृत पशुओं में अधिक है। बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ना, हिरन की तरह कुलाँच भरना, पक्षियों की तरह आकाश में उड़ना, मनुष्य से कहाँ बन पड़ता है ? चींटी, दीमक, मकड़ी, मधुमक्खी जैसे छोटे-कीड़ों में ऐसी कितनी विशेषताएँ पाई जाती हैं; जो मनुष्य को शायद कभी भी उपलब्ध न हो सकेंगी। कितने ही पक्षी अपने नियत समय पर हजारों मील लंबी यात्राओं पर निकलते हैं और बिना राह भूले अभीष्ट स्थानों पर प्रवास की अवधि पूरी करके अपने पूर्व स्थानों पर वापिस आ जाते हैं। मनुष्य इन विशेषताओं की दृष्टि से काफी पीछे हैं। फिर अन्य प्राणी क्यों प्रगति पथ पर आगे न बढ़ सके और मनुष्य सृष्टि का मुकुटमणि कैसे बन गया ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है—उसकी सद्भाव संपन्नता आत्मिक उत्कृष्टता।

अध्यात्म विज्ञान का, ब्रह्मविद्या का, एक मात्र लक्ष्य इस सद्भाव संपदा की मात्रा बढ़ाते चलना है। ईश्वर का अधिकाधिक सघन संपर्क इसी प्रयोजन के लिए अभीष्ट होता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए की जाने वाली विविध साधनाएँ किस मात्रा में सफल हो रही हैं ? इसकी एक मात्र कसौटी यही है कि उस व्यक्ति के अंतःकरण में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्मलता एवं कोमल संवेदनाओं का परिमाण कितना बढ़ा ? यदि भीतरी स्वार्थपरता और निष्ठुरता यथावत बनी रहे तो समझना चाहिए कि ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले साधनात्मक प्रयत्नों का कोई परिणाम नहीं निकला। मनुष्य की श्रेष्ठता का यदि आधार ढूँढ़ा जाए तो वह उसकी उन प्रदीप्त सद्भावनाओं में ही देखा जा सकता है जो अपनी प्रखरता के कारण सत्प्रवृत्तियों में परिणत हुए बिना रह ही नहीं सकती। ब्रह्म के असंख्य क्रिया-कलाप है, पर जब परमात्म चेतना का आत्म चेतना के साथ संबंध होता है तो बिजली के दोनों तार छूने पर चिनगारियाँ निकलने की तरह उस श्रेष्ठता के ही लक्षण प्रकट होते हैं, जिन्हें उत्कृष्ट आदर्शवादिता कहा जाता है। पशु और मनुष्य के बीच इसी विशेषता के अभिवर्धन का अंतर होता है। इसे अतिरिक्त ईश्वरीय अनुग्रह या अनुदान कह सकते हैं।

बुद्धि-कौशल ने सद्भावों को बढ़ाया या सद्भावों से बुद्धि कौशल बढ़ा, इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते समय बुद्धि चमत्कार का पक्ष लेने को जी करता है, क्योंकि प्रत्यक्ष उपयोग उसी का अधिक होता है। सुविधा-साधनों के उपार्जन अभिवर्धन में बुद्धि ही अग्रिम मोर्चे पर खड़ी दीखती है इसलिए उसको प्रमुखता दी जाए ऐसा जी करता है, किंतु अधिक गंभीरता से चिंतन करने पर तथ्य सर्वथा उलट जाते हैं। जितनी गहराई में उतरते हैं उतनी ही यह सचाई सामने आती है कि मनुष्य की मौलिक विशेषता सद्भावना है इसीलिए उसकी इस प्रधानता-महत्ता को मनुष्यता का नाम दिया जाता रहा है।

सच्चे ब्रह्म परायण व्यक्ति की सत्ता संत-सज्जन-परमार्थ परायण ब्राह्मण, आदर्श के मूर्तिमान प्रतीक ऋषि, युग साधना में निरत महामानव लोक मंगल के लिए अपना सर्वस्व लुटा देने वाले भूसुर के रूप में अपनी प्रखर उत्कृष्टता का परिचय देती है। विडंबना रखने वाले और भ्रम-जंजालों में उलझे रहने वालों की बात दूसरी है, वे चित्र-विचित्र कर्मकांडों में स्तवन उपहारों से ईश्वर को प्रसन्न करने और उससे तरह-तरह की मनोकामनाएँ पूरी कराने के ताने-बाने बुनते रहते हैं। इन दिनों अन्य क्षेत्रों में फैले हुए बुद्धि विभ्रम की तरह अध्यात्म क्षेत्र में भी ऐसी ही विडंबना चरम सीमा पर पहुँची हुई है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और लोग ईश्वर की अपनी चाल बाजियों से फुसला लेने के लिए नित-नये जाल बुनते रहते हैं। इस बाल-बुद्धि से किसे कितना प्रतिफल मिलता है ? इसे तो वे ही जानें, पर तथ्य यह है कि यथार्थवादी ईश्वर भक्ति का परिणाम एक ही है। अंतःकरण की सद्भाव संपदा का अधिकाधिक विस्तार और परिष्कार। यह वैभव जिन्हें भी प्राप्त होता है, वे देव मानव होकर जीते हैं। अपने समीपवर्ती वातावरण को स्वर्ग तुल्य सुख-शांति से घिरा-हराभरा बनाते हैं। स्वयं असीम आत्म संतोष और सघन जन सम्मान प्राप्त करते हैं। समस्त विश्व उनकी कृतियों का कृतज्ञ रहता है। जन-मानस को उनके द्वारा प्रबल प्रेरणा होती है और सामायिक विकृतियों के समाधान में वे आशातीत योगदान देते हैं। जीवन को सच्चे अर्थों में धन्य बनाने की यही सफल साधना है।

ऐसे व्यक्तियों की चेतना मल आवरण विक्षेपों से रहित होकर जो निर्मलता प्राप्त करती है, उससे ब्रह्म चेतना यथेष्ट मात्रा अपने में धारण कर लेना संभव हो जाता है। इस संपदा का परिचय देवात्माओं के ऐसे महान् कृत्यों द्वारा मिलता है, जिन्हें सामान्य स्तर के व्यक्ति असामान्य, असंभव और चमत्कारी मानते हैं। कभी-कभी वे भौतिक क्षेत्र में भी अपनी विशिष्टता के ऐसे परिचय देते हैं, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धि की विशिष्टता कहा जा सके।

अंतरात्मा में बढ़ती हुई विवेकशीलता जब दूरदर्शिता अपनाने और दृष्टिकोण को परिष्कृत करने में सफल होने लगे तो जानना चाहिए ब्रह्म चेतना का अवतरण हो रहा है और मनुष्य आत्मिक प्रगति की दिशा में निश्चित रूप से बढ़ रहा है। ऐसे व्यक्तियों की इच्छा, आकांक्षाएँ वासना, तृष्णा की क्षुद्रता से ऊपर उठती ही हैं। उन्हें लोभ मोह की कीचड़ में सड़ते रहने की दयनीय दुर्दशा असह्य हो उठती है। पेट और प्रजनन तक जीवन संपदा को नियोजित किए रहने में उन्हें घाटा ही घाटा दीखता है अस्तु वे अपनी गतिविधियों का नए सिरे से निर्धारण करते हैं। विश्व मानव की सेवा साधना में ही उन्हें जीवन-संपदा की सार्थकता दीखती है अस्तु निर्वाह की आवश्यकताओं को सीमित करते हैं। सादगी में रहते हैं। मितव्ययता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बरतते हैं। परिवार के पिछले उत्तरदायित्वों के निर्वाह में ही जब कमी रह जाती है तो नए बच्चे-कच्चे पैदा करते जाने की मूर्खता तो उनसे बन ही नहीं पड़ती। भौतिक ऐषणाओं को निग्रहीत करने के उपरांत ही इतनी कुछ सामर्थ्य बच सकती है, जिसके सहारे आत्मिक प्रगति के लिए, ईश्वर प्राप्ति के लिए, अनिवार्य रूप में आवश्यक आदर्शवादी परमार्थ परायणता को अपनाया जाना संभव हो सके। सच्ची ईश्वर भक्ति इसी प्रकार किसी सच्चे भक्त पर अवतरित होती है और जीवन की दिशा धारा बदल डालने के रूप में अपने अस्तित्व का परिचय देती है।

जीवनधारा को उत्कृष्टता की इस दिशा में मोड़ देना ही विद्या का लक्ष्य है। उसे ही ब्रह्मविद्या या आत्म विज्ञान कहा जाता है।

जीवन को भव्य बनाने वाली, विद्या—

ईश्वर उपासना का प्रभाव मनुष्य के जीवन निर्माण में किस प्रकार होता है, इसको समझने के लिए आत्मा के स्वरूप और उसका परमात्मा के साथ क्या संबंध है ? यह जानना बहुत जरूरी है। जब मनुष्य अपने आपको शरीर तथा इंद्रियों से पृथक देखता है और आत्मिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयत्न करता है तो उसकी बुद्धि में एक नए ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न होता है। वह समझता है कि यह इंद्रियाँ यह शरीर आत्मोत्थान के महत्त्वपूर्ण साधन मात्र हैं अतः इनका सदुपयोग भी करना चाहिए। पर इनके विषय में आसक्त न होना चाहिए। इस प्रकार की धारणा जब तक नहीं बन जाती तब तक मनुष्य को विचार-विभ्रम होता रहता है, पर जैसे ही इस प्रकार की निश्चयात्मक बुद्धि बनी कि यह शरीर तो कोई नष्ट हो जाने वाली वस्तु है, वहीं मृत्यु का भय छूट जाता है, भय और प्रलोभनों से मुक्त होना अथवा आत्मा के स्ववश होना ही जीवन-मुक्ति है, इसी का नाम ब्रह्म-विद्या है।

वेद और उपनिषदों में जो ज्ञान संग्रहीत है, उससे मालूम पड़ता है कि ऋषियों ने इसी विद्या के प्रकाश में अनंत ऐश्वर्यशाली परमात्मा का साक्षात्कार किया। मनुष्य के साथ उस परमात्मा का क्या संबंध है इसे भी स्थान-स्थान पर प्रकट किया है। परंपरा, प्रतिपादन पद्धति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा ज्ञातव्य आदि के भेद से इन वर्णनों में अनेकरूपता तो है, पर उनमें विरोधी भाव नहीं है। कुछ अंश तो एक-दूसरे के पूरक हैं, कुछ में केवल साधना पद्धति की भिन्नता है, तथापि ब्रह्म विद्या के इन अनेक रूपों के अंतस्तल में स्वरूपगत एकता बनी हुई है। ब्रह्म की शक्ति और उसके जीवन को भव्य बनाने के संबंध में उनमे कहीं भी मतभेद नहीं हैं। परमात्मा की उपासना चरित्र निर्माण का अत्यंत आवश्यक अंग है, यह बात सब स्वीकार करते हैं।

परमात्मा की दिव्य-शक्ति का अवतरण मनुष्य के जीवन में किस प्रकार होता है। इस संबंध में ऋषियों की सैद्धांतिक मान्यता यह है—

या आत्मदा बलदायस्य विश्व उपासतेप्रशिष यस्य देवाः यस्यच्छाया अमृतयस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।

—यजु० २५।१३

"यह परमेश्वर उपासनीय है क्योंकि उसके चिंतन से मनुष्य को आत्मा के स्वरूप को समझनें में सहायता मिलती है। आत्म-ज्ञान उसके अंदर महान् बल पैदा करता है। सारे विश्व में उसका महत्त्व आच्छादित है पर उसे पाते वही हैं, जो उसके प्रशासन में रहते हैं अर्थात् उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।"

ब्रह्मविद्या का संपूर्ण गूढ़ तत्त्व इस मंत्र में निचोड़कर रख दिया है। यह सच बात है कि जब तक लोगों में ऐसा विश्वास या जिज्ञासा नहीं पैदा होती कि इस विश्व का अंतिम निर्णायक कोई परमेश्वर है, तब तक वे केवल सांसारिक कर्मों में लौकिक और भौतिक सुखों की उपलब्धि में ही लगे रहते हैं। ईश्वर की बात और उसके अस्तित्व पर विश्वास होते ही भौतिक दृष्टिकोण का एकाएक विराम होता है और उसकी मानसिक चेष्टाएँ अंतर्मुखी होने लगती हैं। मनुष्य के विचार और अनुभव का क्षेत्र जितना अधिक विकसित होता है उतना ही उसे इंद्रियों और उसके विषयों की निस्सारता समझ में आने लगती है। जिन कार्यों में लोग प्रमादवश अपनी शक्ति और सामर्थ्य ही गँवाया करते हैं, वह उन्हें रोककर आत्म शोधन की साधना में लगता है। फलस्वरूप उसकी आत्मिक प्रगति होती है और वह अपने सूक्ष्म आध्यात्मिक स्वरूप को भी समझने लगता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा की मान्यता जितनी ही दृढ़ होती जाती है मृत्यु का भय उतना ही दूर होता जाता है, इससे उसके हृदय मे बल का संचार होता है किंतु इस समय मन की अधोगामी प्रवृत्तियाँ भी चुप नहीं रहती। संसार के दूषित तत्त्व भी उसे अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसलिये कहा है कि इस संघर्ष काल में जो जागृत पहरेदार की तरह सदैव सावधान रहते हैं और ईश्वरीय आदेशों का पालन करते हैं, ईश्वर की पूर्ण कृपा उसे ही प्राप्त होती है। उसी का जीवन भव्य बनता है।

ईश्वर की आज्ञाएँ क्या हैं, हमारे लिए समझने के लिए यह सबसे कठिन बात नहीं है। आमतौर पर हमारे जीवन की प्रत्येक गतिविधि का संचालन मन करता है और अपना अच्छा-बुरा जैसा भी कुछ मन है, उसकी बातों को ही ईश्वर की आज्ञाएँ मानकर पूरा किया करते हैं किंतु जब कभी मन कोई बुरा कर्म करता है तो उससे अंतःकरण में दुःख प्रकट होता है। परमात्मा का आदेश समझने की सीधी कसौटी यह है कि जिन कार्यों से आत्महीनता असंतोष और अशांति उत्पन्न होती हो उन्हें न करना और जिनसे दिव्य तत्त्वों की वृद्धि होती हो आत्म सुख, संतोष और शांति मिलती हो उनका विकास करना ही ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना है।

मन की प्रवृत्ति आमतौर पर अधोमुखी होती है इसलिए आत्मा को अपनी बुद्धि और सामर्थ्य का प्रयोग करना चाहिए। मन को बुरे कर्मों से बार-बार हटाने और उसे शुभ कर्मों में लगाए रखने में कुछ दिन में उसकी प्रवृत्ति भी सतोगुणी हो जाती है। पाप करने या बुद्धि का दुरुपयोग करने से ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार उसको लज्जित होना पड़ेगा और उसका सिर झुका रहेगा। पर सतकर्म लौकिक या आत्मिक सभी दृष्टियों से मनुष्य को सुख प्रदान करने वाले ही होते हैं और उनसे अपना आत्माभिमान भी विकसित होता है, तथा शक्तियों और सामर्थ्यों का विकास भी उसी क्रम से होता जाता है।

यह बात तो सभी चाहते हैं कि हमारे मन में बुरे विचार कभी न आवें। हम सदा शांत और आनंदमय रहें, दुःख का भान न हो। इसके लिए लोग प्रयत्न भी करते हैं किंतु संसार की गति भी कुछ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी है कि मन को आघात पहुँचाने वाली घटनाएँ यहाँ घटती रहती हैं, उन घटनाओं को सहते हुए भी जो मन को वश में रखता है, और उसे शुभ-संकल्पों से रिक्त नहीं होने देता ईश्वर की आज्ञाओं का सच्चे मन से वही पालन कर सकता है; जो मन को चंचल, अस्थिर या विकारपूर्ण नहीं होने देते, वह सच्चे साहसी वीर और गंभीर होते हैं। इन दैवी सत्प्रवृत्तियों के आधार पर निरंतर उसे परमात्मा की कृपा प्राप्त होती रहती है और वह आत्म विकास की साधना में उत्तरोत्तर सफल होता हुआ आगे बढ़ता है।

आत्मा के विकास और ईश्वर की प्राप्ति के लिए केवल दैवी गुण भी चिरकाल तक नहीं टिक सकते, ईश्वर भक्ति, जप उपासना आदि आवश्यक है, किंतु जहाँ भक्ति हो वहाँ श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, दया, करुणा, उदारता, त्याग, सहयोग, सहानुभूति, क्षमा आदि दैवी गुण भी अवश्य होने चाहिए। कर्म चाहे जैसे करो, ईश्वर सब क्षमा करेगा—इस मान्यता ने व्यक्ति और समाज दोनों का बड़ा अहित किया है। ईश्वर को मानने का दावा करने वाले लोग दैवी गुणों की परवाह न करके इस भ्रम में पड़ गये हैं कि गुणों का विकास चाहे हो या न हो ईश्वर भक्ति से हमारा सब कुछ ठीक हो जाएगा। इस संकीर्ण दृष्टिकोण ने ब्रह्मा-विद्या के सच्चे स्वरूप की आस्थाओं को भी नष्ट कर दिया है और बुद्धि प्रधान लोग उसे संदेह की दृष्टि से देखने लगे हैं। यह स्वाभाविक भी है। ब्रह्म-विद्या का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व का उत्कर्ष मनुष्य में देवत्व का उदय, ईश्वरीय प्रकाश का अंतःकरण में अवतरण और जीवन में दैनंदिन आचरण, से उसकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।

सूक्ष्म और कारण शरीर को परिष्कृत-विकसित करना ब्रह्म विद्या का उद्देश्य है। यह विकास-परिष्कार निश्चय ही स्थूल-शरीर पर भी प्रभाव डालेगा। सत्परिणाम उत्पन्न करेगा। श्रद्धा आस्था की भाव-संवेदना, शरीर, मन वचन और कर्म पर सुनिश्चित एवं सुस्पष्ट प्रभाव डालती हैं और व्यक्तित्व का स्वरूप विनिर्मित करती हैं।

❐ ❐

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org